RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 4 अंक 12 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका

जनवरी 2022

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

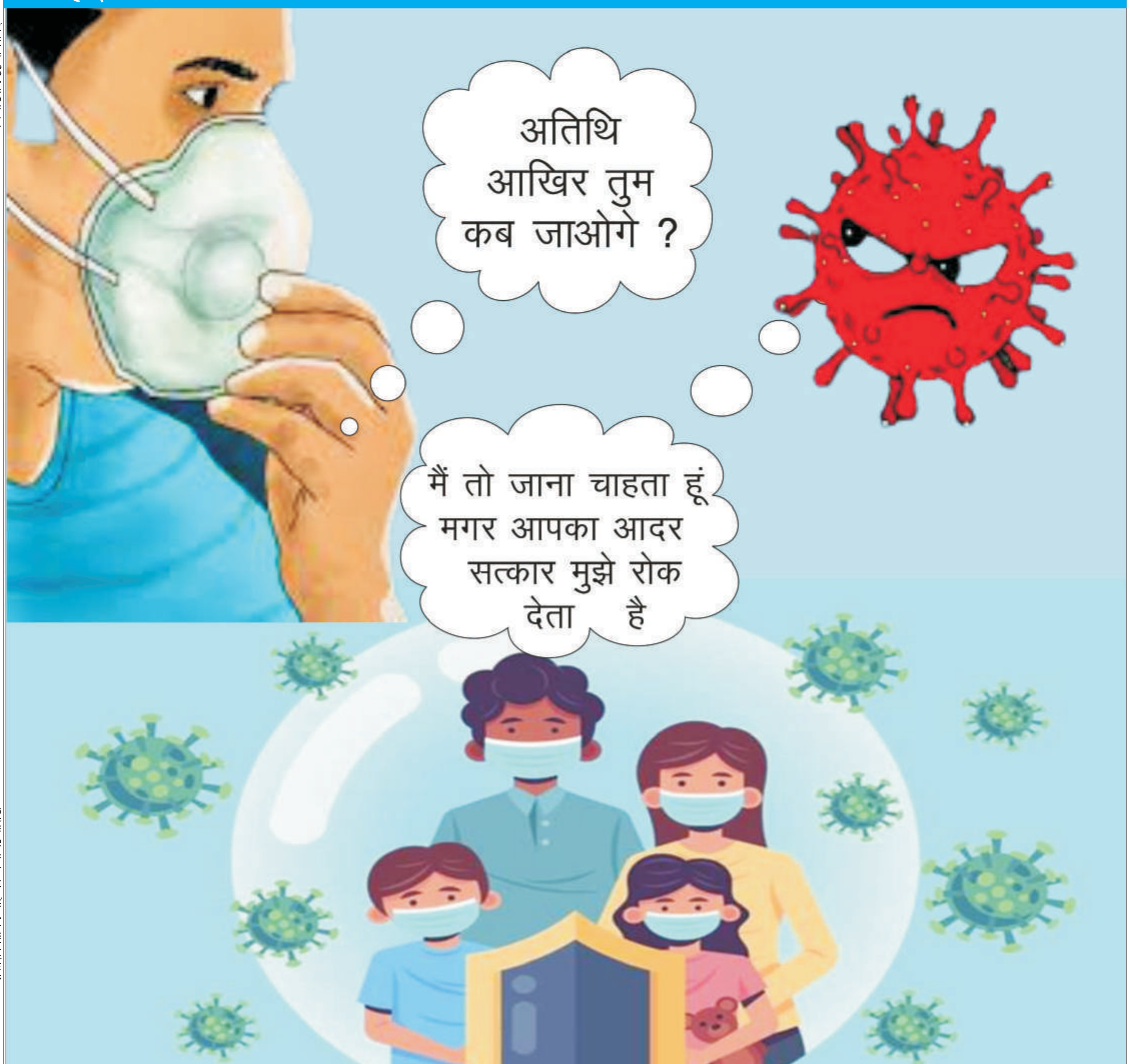

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News
मेवाड़ी जयवर्द्धन

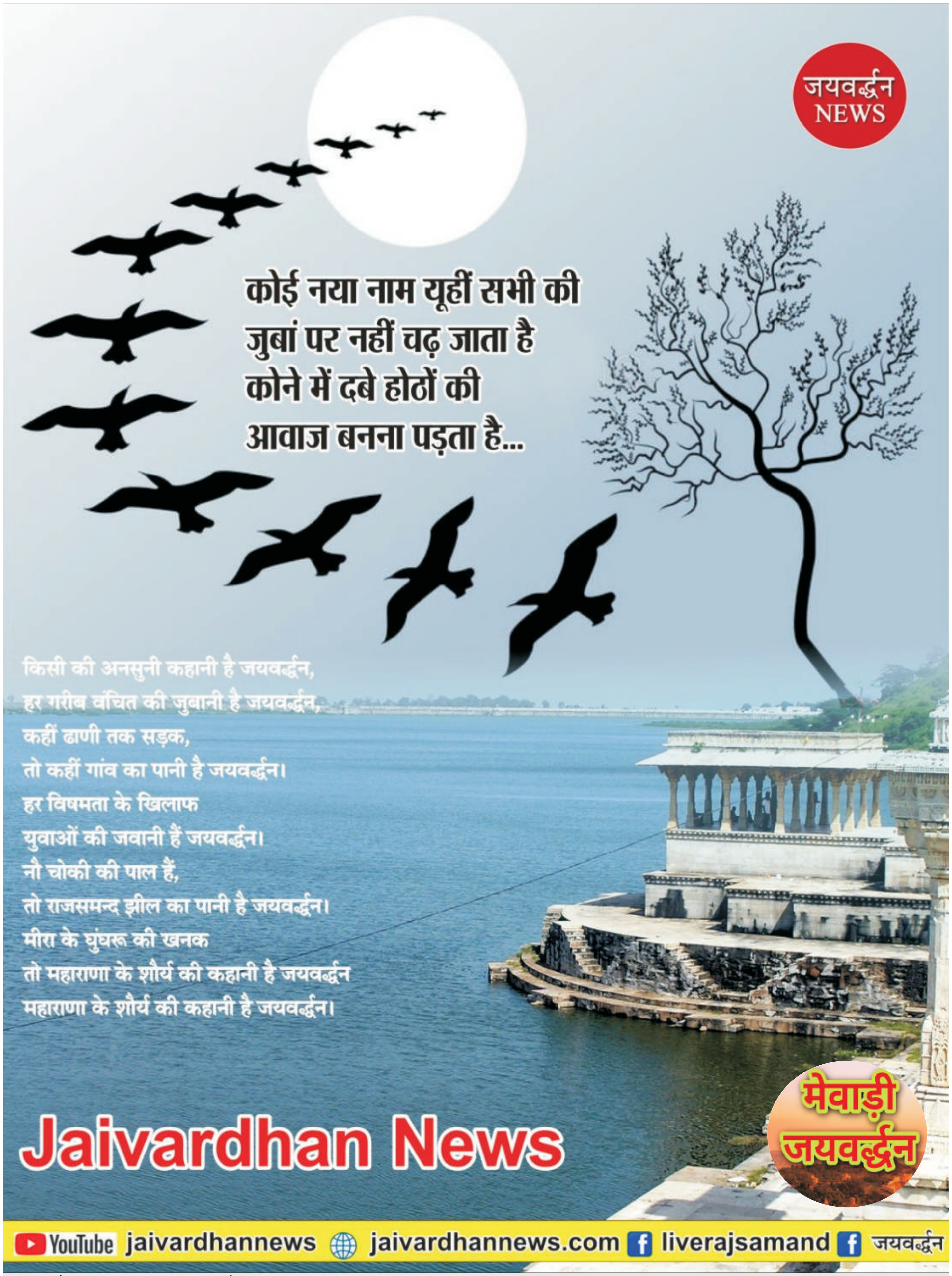
जयवर्द्धन NEWS
कोई नया नाम यूहीं सभी की
जुबां पर नहीं चढ़ जाता है
कोने में दबे होठों की
आवाज बनना पड़ता है...
किसी की अनसुनी कहानी है जयवर्द्धन,
हर गरीब वंचित की जुबानी है जयवर्द्धन,
कहीं ढाणी तक सड़क,
तो कहीं गांव का पानी है जयवर्द्धन।
हर विषमता के खिलाफ
युवाओं की जवानी हैं जयवर्द्धन।
नौ चोकी की पाल हैं,
तो राजसमन्द झील का पानी है जयवर्द्धन।
मीरा के घुंघरू की खनक
तो महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन
महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन।
Jaivardhan News
मेवाड़ी जयवर्द्धन
YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

सम्पादकीय

क्या खोया क्या पाया

'क्या खोया क्या पाया जग में, मिलते और बिछड़ते मग में,
मुझे किसी से नहीं शिकायत, यद्यपि छला गया पग पग में'।

स्वर्गीय कवि आदरणीय अटल बिहारी जी वाजपेयी की पंक्तियों में क्षुब्धता के साथ जीवन का सार परिदृश्यित होता है। खोना और पाना, मिलना और बिछड़ना चलायमान प्रक्रिया है। जीवन में जो कुछ घटित हुआ उसकी शिकायत न करके, क्षमा भाव रखते हुए आगे बढ़ जाना ही उदारीकरण है।

वर्ष 2022 अपनी बाहें फैलाए अपनी आगोश में हमें समेट रहा है, और वर्ष 2021 का दामन सिमट सा गया है। महामारी के दौर वर्ष 2020 व 2021 के कुछ अविस्मरणीय क्षणों की अमिट छाप हम सभी के ह्रदय पर अंकित रह जाएगी। जाते-जाते वर्ष 2021 हमें बहुत कुछ सिखा गया है, उन्हीं सिखों के कुछ पहलू आप सभी के साथ साझा करने का प्रयास कर रहा हूं।

स्वास्थ्य जीवन की अमूल्य निधि है, और तनाव जीवन का शत्रु है, यह तथ्य हम सभी अब भली-भांति जान चुके हैं। नए वर्ष में स्वयं को और समाज को स्वस्थ रखने की दिशा में कदम मजबूती से बढाना होगा, इसके साथ ही व्यसन व नशामुक्त राष्ट्र भी हमारी पहल होनी चाहिए। भविष्य में परिवर्तनों का आमना-सामना करते हुए अर्थतंत्र को संभाले रखना चाहे वह पारिवारिक हो या राष्ट्रव्यापी हमारी प्रमुखता में शामिल होना चाहिए। युवाओं को अपनों से और अपनी माटी से जुड़ाव समझने की भी आवश्यकता है इसके साथ मानवीय मूल्यों, नैतिकता व समता का पालन करते हुए पर्यावरण को बचाए रखना अपनी प्राथमिकता बनाना होगा।

वर्तमान दौर में सूचना प्रौद्योगिकी ने विगत वर्षों में अपनी महत्वता को प्रमाणित किया है, सुरक्षित, सहज, पारदर्शी व दोष रहित सूचना प्रौद्योगिकी को आत्मसात करना हमें मजबूती प्रदान करेगा। नई पीढ़ी को अच्छा कर्मचारी होने से आगे बढ़कर अच्छा नियोक्ता एवं नवाचारी उद्यमी बनने की भावना को बलवती करना होगा। राष्ट्र की सीमाओं पर और सीमाओं के भीतर सौहार्द को स्थापित रखना होगा। विकृत मानसिकता के दौर में अध्यात्म और विज्ञान को साथ लेकर चलने की मानसिकता का विकास अति आवश्यक है।

बढ़ते शहरीकरण के साथ सुलभ संचार, ऊर्जा के नवीन स्रोत, प्रदूषण मुक्त यातायात व रोजगार के नवीन अवसरों को पुख्ता करने की भी आवश्यकता रहेगी। बहुराष्ट्रीय संस्थानों की स्थापना के साथ-साथ स्थानीय लघु, कुटीर व कृषि आधारित उद्योगों के विपणन पर दृष्टि डालनी होगी। हमारे शिक्षण संस्थानों को अकादमिक, व्यावसायिक व शोध शिक्षा के साथ समाज निर्माण की दिशा में भागीदारी बढ़ानी होगी। स्वस्थ साहित्य व मनोरंजन की दिशा में कलमकारों को नैतिक मूल्यों पर तटस्थता रखनी होगी। प्रबुद्ध वर्ग को राजनीति की अग्रिम पंक्ति में आना अति आवश्यक है। कहने को तो बहुत है, पर अंत में कहना चाहता हूं कि थोड़ा समय निकाल कर कभी स्वयं को पढने का प्रयास अवश्य करें।

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर, लेखक एवं कवि
कांकरोली, मो. 9784652469

इस अंक में खास

1. **कवर स्टोरी 1 :** कोरोना : हमारी मानवीय संवेदनाओं की परीक्षा — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** सतर्कता जरूरी — पेज - 6
3. **कहानी :** प्यार के रंग — पेज- 8
4. **चिंतन :** बहुउद्देशीय चिकित्सालय ट्रांसफर..... उठ रहे सवाल — पेज- 9
5. **राजसमंद आज कल और कल** — पेज - 10
6. **अध्यात्म :** प्रभु मेरे अवगुण चित न धरों... — पेज - 11
7. **अध्यात्म :** सहजो बाई की गुरु भक्ति — पेज - 16
8. **व्यंग्य :** भैंस के ट्रांसफर से दु:खी जनता — पेज - 13
9. **विचार मंच :** जनसहभागिता और स्वार्थ — पेज - 14
10. **तीखी मिर्ची :** मुर्दा भीड़ और नेता — पेज - 16
11. **कविताएं :** पन्नाधाय का त्याग — पेज - 17
12. **मेरा गांव मेरे लोग :** पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित — पेज- 20
13. **चिंतन :** एक संविधान, एक भगवान और एक विधान — पेज - 28
14. **व्यंग्य :** सोशल मीडिया गरुड़ पुराण — पेज - 30
15. **मेवाड़ी चौपाल :** नाहर ऊं लड़वा रो मौको दो — पेज - 32

कोरोना : हमारी मानवीय संवेदनाओं की परीक्षा

सामान्य दिन होते तो ऐसा नहीं होता। दिन होता, रात ढलती, फिर दिन होता। पल पल छिन छिन कुछ घटता, कुछ न घटता, कुछ मुट्ठियों में बंद रह जाता, कुछ बिखर भी जाता तो पकड़ने के लिए दौड़ने की शीघ्रता न होती। खिड़की से किरणें उतरतीं, चिड़ियां चहचहातीं, सूरज अपनी तपन यात्रा पूरी करते, सांझ आती, ढल जाती। न एहसास होता और न कुछ बदल जाए, ऐसी त्वरा होती।

यह देनन्दिन चर्या तब विचलित करने लगी, जब इस शताब्दी के एक काल खंड में अचानक उठ खड़े हुए तूफान से हमारी आंखों के सामने आ रहे ये दृश्य धुंधला गए और मन और होंठ हाहाकार मचाने लगे।

कोविड-19 की त्रासदी ने अंतर्मन की वेदनाओं को सुर बेसुर किया, असह्य कष्टों के सैलाब में हमें घेर भी लिया। कुछ अपने असमय हमसे बिछुड़ भी गए, लेकिन यह मानव प्रकृति ही है, जब इस गंभीर आपदा के बीच परिवर्तन की गरम हवा बहना भी शुरु हुई और हमने इसी आपदा में अवसर की तलाश करना प्रारंभ कर दिया। ऐसा लगाए मानों कैक्टस की डाल पर गुलाब के फूल खिलने लगे हो। संवेदनशील मनुष्य जाति ने स्वयं को प्रथम ढालना शुरू किया और फिर उसे अपने जीवन की नियति मान एक नए गतिमान माइंड सेट का निर्माण करना शुरू कर दिया। बमुश्किल दो ढाई वर्ष हुए, समझने और संभलने के आंतरिक विकास की प्रकृति ने जीवन को अब पुनर्संयोजित करना प्रारंभ कर दिया है। यही हमारी जीवन जीने की कला का नया विहान कहा जाना चाहिए, क्योंकि कहा भी गया है।

जिन्दगी इन्सान की संग्राम है
आदमी चलता रहे फिरता रहे
सिर पकड़ के बैठ जाना पाप है
आदमी उठता रहे गिरता रहे।

उक्त बदलाव मनुष्य की अंत: एवं बाह्य प्रकृति दोनों में ही हुआ है और यह इसलिए कि मानव स्वत: ही अपनी तासीर में जड़ न बनकर चेतन बने रहने की अंतश्चेतना से प्रेरित रहता है।

इतिहास में ऐसे अवसरों की कमी नहीं रही जब मानव प्रकृति में बदलाव न हुआ हो। प्राय: यह बदलाव स्थिति और परिस्थिति वश हुआ। फिर वह मुगलकालीन आक्रमणों के कारण हुआ हो, जिसने प्रतिक्रिया स्वरूप भारतवर्ष को सांस्कृतिक व धार्मिक एकता के सूत्र में पिरोया हो अथवा ब्रिटिश साम्राज्य की विस्तारवादी नीतियों के विरुद्ध हुआ हो, जिसने उन्नीस सौ सैंतालीस में नए लोकतांत्रिक भारत के रूप में आकार लिया हो। वैश्विक धरातल पर रूस की क्रांति इसका ज्वलंत उदाहरण है, जब जारशाही के विरुद्ध उदारमना सोवियत संघ का निर्माण हुआ।

भारतवर्ष की आजादी की लड़ाई को तो हमने यहां एक अभिनव जीवन शैली के रूप में अनुभव किया जहां भारतीय जन मानस की शिक्षाए साहित्यए राजनीतिकएसामाजिक कौशल की संस्कृति में ही परिवर्तन की बयार को हमने देखा। लेकिन मानव जीवन के हर क्षेत्र में जीवन शैली गत् एक अनूठा परिवर्तन हमने पाया है, एक अदृश्य शत्रु के विरुद्ध किए जा रहे सतत् संघर्ष में सन् 2019 से निरंतर। यह युद्ध न ही देशों के विरुद्ध सीधे सीधे रहा है और न ही किसी जाति, धर्म के विरुद्ध। शत्रु भी ऐसा जिसे एक बार तो हम समझ

ही नहीं पाए, बस परास्त होना ही हमारी नियति रही और वे दंश अब तक हमारी आंखों से गंग यमुन बन बह रहे हैं। अलबत्ता जैसा कहा गया है। धरती की शान तू है/ मनु की संतान/ तेरी मुट्ठी में बंद तूफान है रे/ मनुष्य तू बड़ा महान् है। कोरोना वायरस जैसे अविजित शत्रु से लड़े जा रहे। अब तक के युद्ध के विरुद्ध मेडिकल साइंस के स्तर पर तो हमने एक सशक्त इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार रखने और वेक्सीनेशन का एक सुरक्षात्मक कवच बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है, हम सफल भी हो रहे हैं लेकिन।

इस एक बड़े प्रयास के अलावा इस वायरस ने हमें एक और बड़ी क्रांतिकारी, संभावनाओं से भरी दृष्टि दी है वह है, बलात् सिर आ पड़ी बला से बचाने को अपनी जीवन शैली में बदलाव के छोटे छोट टिप्स जो हमारे लिए जीवनदायी बन रहे हैं और पारंपरिक यथास्थितिवादी बद्धमूल जीवन जीने के तरीकों को अपनाकर हौंसलों की नई उड़ान भरने के लिए अवसर भी। जीवन शैली में परिवर्तन ने हमें सामाजिक और वैयक्तिक रूपान्तरण के विपुल अवसर दिए हैं।

अब तक संभवत: हम समझते आये थे कि किसी भी परिवर्तन को जमीनी धरातल पर उतारने की जिम्मेदारी शासन, प्रशासन समग्रत: सरकार की है। अब कोरोना ने हमें महामारी के नियंत्रण के लिए सरकार के कदम से कदम मिलाकर चलने का मंत्र दे दिया है। स्वयं को बदल लें यदि अब तक न बदले। हमारी सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत स्वास्थ्य के रक्षण में छोटे छोटे महत्वपूर्ण करणीय कार्यों के प्रति जागरूकता हमें वायरस के विरुद्ध जीत ही देगी। आज देश और विश्व स्तर पर अधिसंख्य कोरोना वारियर्स इस दिशा में प्रयास की सफलता के ज्वलंत उदाहरण हैं। सकारात्मक सोच से उत्पन्न नई ऊर्जा भूतो न भविष्यति मनुष्य की शक्ति का इतिहास लिखेगी। स्वस्थ और सुखमय भविष्य के लिए यह समय निरंतर विज़न, एक्जिक्यूशन, मोनिटरिंग, रिजल्ट, फीड बेक और फोलो अप के रूप में सरकार, स्वास्थ्यकर्मी, कोरोना वारियर्स, कर्मचारी, शिक्षक और हर आम की सक्सेस स्टोरी लिख रहा है। हमें अब समय की कीमत और नब्ज समझ आना प्रारंभ हो गया है। परिणाम ? समस्याओं के अंधेरे में सफलता और संभावनाओं का सूरज अब निकल चुका है।

कोरोना महामारी जैसा कि धूमिल ही सही, हो सकता है, अभी यह हमारा कुछ दिन, कुछ माह, कुछ वर्ष पीछा ही न छोड़े तो जरूरी होगा, हमें इसके विरुद्ध संघर्ष का एक और रास्ता अपनाना। लक्ष्य अंतत: महामारी से मुक्ति, हां, इसके लिये हमें अपनी रणनीति को भी खंगालते रहना जरूरी होगा। जैसे शुरुआती दौर में लोक डाउन को हमने एक सशक्त हथियार माना था। समय के साथ देश दुनियां के अर्थ तंत्र को सुरक्षित, संरक्षित रखने हेतु अब इसके समानान्तर सुरक्षा उपायों की जरूरत का पर्याय मानते हुए मास्क, सेनिटाइजर और सोशल डिस्टेंसिंग पर अधिक केन्द्रित होने की बात कही जा रही है। इन तरीकों को प्रभावी बनाने के लिये अब वर्क फ्रोम होम, ओन लाइन शिक्षण, वर्चुअल डायलोग और अब तो चुनाव प्रचार में भी आईटी सेल्स के गठन द्वारा प्रत्यक्ष भीड़ के स्थान पर वर्चुअल माड्यूल का उपयोग किया जाना अनुशंसित है। विद्यार्थियों के लिये ई कन्टेंट आने वाले समय में ऑनलाइन शिक्षण के साथ वैकल्पिक शिक्षा के आयाम स्थापित करेगा।

कोरोना काल में हमें अपने स्वास्थ्य के लिए घरेलू आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक औषधियों के साथ वनस्पति जगत में मिलने वाले ढेरों प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने वाले उत्पादों के प्रति स्वयं आयुष मंत्रालय भी अनुशंसा कर रहा है। इससे भारतीय उत्पादों के प्रति हर आम का ध्यानाकर्षित भी होगा। इन सभी के लिए हमारी जिज्ञासा हमारे सीखने समझने के परिदृश्य का विकास करेगी।

कोरोना महामारी ने व्यक्तिगत सुख दु:खों के समाधान की अपेक्षा के साथ परिवार, पड़ौस, समाज के प्रति मानवीय संवेदनाओं का भाव विकसित किया है। रिश्तों की अहमियत समझने और अपनों परायों को विपदा की कसौटी पर कसे जाने का अवसर भी इसी महामारी ने दिया है। सामाजिक संगठनों की कोरेंटाइन सेन्टर्स से लेकर रेल्वे और बस स्टेशनों तक के मज़लूम यात्रियों की, की गई सेवा सुश्रूषा, भोजन व्यवस्था से आप हम परिचित हैं।

व्यक्तिगत अनुभव है कि लॉकडाउन के दौरान मोहल्ले में एंबुलेंस आते ही पीड़ित पेशेंट को अस्पताल तक पहुंचाने, परिवार को दहशत भरे वातावरण में समझाइश करने और छोटे बच्चों को संभालने सहित सलाह मशवरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई है। यह एक नागरिक होने और पारिवारिक भावना के साथ उस अवधि में जीने का अंदाज है जो स्मरणीय है। रिश्तों की अहमियत की इस अवधि में अनेक दृश्यावलियां हैं।

ईश्वर करें, ऐसा कभी न हो लेकिन कोरोना हमारी मानवीय संवेदनाओं की परीक्षा की कसौटी है। इस कसौटी पर जब हम जीते, मन में हर्षित हुए और जब हारे तो सात सागरों की गहराइयों से अश्रु घट भर हमने रुदन के उन पलों में अपनी आंखों से उंडेल दिया।

अंसुवन जल सींची सींच
प्रेम वेलि बोई।
अब तो वेलि फैल गई
आणंद फल होई।।

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार द्वारकेश मार्ग,
कांकरोली, मो. 9460252308

सतर्कता जरूरी

धीरे-धीरे सब सामान्य हो चला था। कोरोना ने पूरे विश्व को बहुत झकझोर कर रख दिया था। पिंजरे में कैद सा विश्व धीरे धीरे फिर से आकाश में पंख पसारने लगा था। इस महामारी में लोगों ने अपना बहुत कुछ खोया। किसी ने रोजगार, किसी ने धंधा, किसी ने अपना सगा, किसी ने पैसा वगैरह। दुकानें बंद हो चुकी थीए मॉल बंद हो गए थेए स्कूल कॉलेज और यहां तक भगवान के मंदिरों को भी बंद किया जा चुका था इस प्रकार की महामारी को सारे विश्व में पहली बार देखा होगा। ऐसा नहीं है कि इससे पहले कभी कोई महामारी नहीं आई हो और विश्व का कोई कोना इससे प्रभावित नहीं हुआ हो लेकिन यह हमारी ऐसी थी जिसे सारा विश्व एक साथ प्रभावित हुआ और सारे देश अपने अपने स्तर पर अपने अपने संसाधनो से इस महामारी से लड़ने में लग गए । कई कठोर कदम इन देशों की सरकारों ने उठाए। कई देश इस तरह से वित्तीय संकट से टूट गए कि अब तक वह उबर नहीं पाए और संघर्ष करते रहे ।

कोरोना की पहली लहर के बाद लोगों के जीने का तरीका बदला। लोगों की सोच में फर्क आया। समाज में एक नया तरीका देखने को मिला। लोगों ने जीवन की अहमियत को समझा। पैसे की अहमियत को समझा और नौकरी की अहमियत को भी समझा। लोगों ने ऐसे धंधे एवं रोजगार को प्राथमिकता देना शुरू किया, जो कोरोनाकाल में भी मैं भी अनवरत जारी रखे जा सके।

विश्व धीरे- धीरे अब कोरोना से मुक्त होने लगा था। कोरोना वैक्सीन लगाए जाने का काम सारे विश्व में जोरों पर था। मानव मन ऐसा महसूस कर रहा था, जैसे किसी जोरदार संकट या यूं कहे साक्षात मृत्यु से सामना करके बाल- बाल बचा हो। कोरोना संकट ही नहीं, अपितु काल ही था, जिसने सबको अपने लपेटे में लिया। क्या बड़ा क्या छोटा, क्या अमीर, क्या गरीब, क्या मंत्री, क्या संत्री, इससे कोई ना बच सका। हर रोज, हर पल बस खबरें चलती तो किसी न किसी के गुजरने की।

कोरोना के आंकड़े बढ़ते जा रहे थे। यह कयास लगाए जा रहे थे कि 2021 तक जाते जाते कोरोना बिल्कुल समाप्त हो जाएगा या इसकी दवा बन जाएगी, जिससे इस महामारी पर अंकुश लगाया जा सके। लेकिन महानगरों में फिर इस रोक ने दस्तक दी। महानगरों में फिर से इस कोरोना ने दस्तक दी। सबने फिर इसे हल्के में लिया। सोचा वैक्सीन बन चुकी है, डोज बन चुके हैं। अब इस पर काबू पाया जा सकेगा, लेकिन दिन-ब-दिन बढ़ते हुए आंकड़े फिर से मानव मन को चिंतित करने लगे।

चाहे केंद्र सरकार हो चाहे राज्य सरकार सभी ने कोरोना की गाइडलाइन जारी कर दी। बड़े कार्यक्रम, रेलियों, आयोजनों पर रोक लगाने के फैसले लिए जा रहे हैं। कम से कम भीड़ इकट्ठी हो ऐसा काम किया जा रहे है। स्कूल, कॉलेज फिर से बंद हो चुके हैं। रात्रि कर्फ्यू भी लगाए जा रहे हैं। यह सभी कदम कोरोना को रोकने के लिए ही है, लेकिन क्या केवल सरकारी तंत्र ही इस कोरोना के प्रभाव को रोकने के लिए कारगर सिद्ध हो सकता है, शायद नहीं। जब तक आम आदमी स्वयं सजग व सतर्क नहीं होगा, तब तक इस महामारी पर नियंत्रण पाना आसान नहीं हो सकता, क्योंकि यह एक संक्रमण से फैलने वाली बीमारी है। आपसी संपर्क से इसमें तेजी आती है। अत: आम आदमी की जागरूकता ही इस कोरोना पर विजय पाने का पहला प्रयास हो सकती है।

जब कोरोना महामारी पर थोड़ा बहुत नियंत्रण पाया जा चुका था, तब बाजार खुलने लगे थे, स्कूल कॉलेज खुलने लगे थे, मंदिर खुल चुके थे और व्यवस्थाएं धीरे- धीरे फिर से अपने पुराने स्वरूप में आने लगी थीं, तब लोगों की लापरवाही ने फिर से इस महामारी को जागृत होने में बड़ा रोल अदा किया। इससे महानगरों में अपने पैर जमाते हुए धीरे- धीरे छोटे शहरों और कस्बों को भी अपनी चपेट में लेने लगी। जब इसके आंकड़े बढ़ने लगे, तो समाज हरकत में आया। लोगों में फिर से वह भय देखा जाने लगा। लोग मास्क लगाने लगे। दूरी बनाने लगे और बाहर के खाने पीने से भी परहेज करने लगे, लेकिन यह समूह बहुत छोटा सा था। लोगों की नासमझी ने या यूं कहें लापरवाह लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या ने इस कोरोना को बढ़ावा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। चाहे गलियां हो बाजार हो दुकान में हो मॉल हो या कोई भी सार्वजनिक स्थान हो लोग बेपरवाह होकर के घूमने लगे। बिना मास्क, बिना कोई उचित दूरी लोगों का मिलना झुलना फिर से आम हो गया। लोगों की यह असावधानी हमें फिर एक बड़े संकट की ओर ले जा रही है। जी हां कोरोना के यह नए आंकड़े फिर से एक वैश्विक संकट की ओर इशारा करने लगे है। क्या हम इस महामारी में जीने के आदी हो रहे हैं या फिर इन महामारी से बेपरवाह

होकर जीने की कोशिश कर रहे हैं? हमारी यह असावधानी या यूं कहे बेपरवाही किसी और परिवारों को या समाज को संकट में डालें, यह कहां तक उचित होगा? यदि हम आज नहीं चेते तो फिर कब? हमें मास्क ही नहीं पहनना है, अपितु उचित दूरी का भी ध्यान रखना होगा। साफ सफाई, स्वच्छता का भी ध्यान रखना होगा। भीड़ भरी जगह से बचना होगा और सबसे बड़ी बात ऐसे बड़े कार्यक्रम जो केवल दिखावे के लिए किए जा रहे हो या अपनी शान शौकत बताने के लिए किए जा रहे हो इनसे परहेज तो करना ही होगा। कारण यही आगे जाकर के बड़ी परेशानियों के सबब बन जाते हैं। लोक लाज के कारण किए गए ये कार्यक्रम कोरोना को बढ़ाने में सहयोगी बन जाते हैं। रोग और संकट के लिए कोई अपना नहीं होता। कोई जाति या धर्म नहीं होता। कोई छोटा बड़ा, अमीर गरीब नहीं होता, वह सबको बराबर चोट पहुंचाता है।

आपने और हमने सभी ने 2019 में इन सबको देखा है। हमने कमरों में बंद रह कर जिंदगी बिताई है। हमने घरों में कैद करके सड़कों के सन्नाटे देखे हैं। हमने टीवी समाचारों, अखबारों से रोज मरने वालों की संख्या और के बढ़ते आंकड़ों को देखा है। हमने अपनी गलियों से गुजरते हुए लाशों के रेले को देखा है। हमने श्मशान में लाइनों में लगी हुई अर्थियों को देखा है। हमने उन बेबस लाशों को भी देखा है, जिसे कोई कंधा ना दे सका। हमने उन पथराई आंखों को भी देखा है, जो दूर से अपने संबंधी को जाते हुए बस देखती रही और छू न सकी। आने वाला समय कल फिर ऐसे दृश्य दिखाएं या महामारी कल फिर अपने रौद्र रूप में ना आ जाए, इसके लिए हमें आज ही तैयार रहना होगा। हम सबको मिलकर के वह प्रयास करना होगा, जिससे यह महामारी और अधिक फैले नहीं। हमें अपनी सजगता और सतर्कता से इस कार्य को करना होगा और यह कोई एक अकेला नहीं कर सकता। किसी सरकार के कहने से या मेरे लिखने से ऐसा नहीं हो सकता। यह केवल सोचकर के भी नहीं किया जा सकता। इसके लिए हमें प्रयास करने होंगे और संयुक्त रूप से किया हुआ प्रयास ही कल समाज को मजबूती प्रदान करेगा कि हम इस महामारी से लड़ सके। हमें यह प्रयास स्वयं से, अपने घर से शुरू करने होंगे, तभी जाकर के कल हम एक समाज का निर्माण कर सकेंगे, जो आने वाले वक्त में समाज को नई ऊंचाइयां देगा। एक रोगमुक्त वातावरण देगा। एक भयमुक्त समाज देगा।

कमलेश जोशी 'कमल'
कांकरोली राजसमंद
मो. 9950741177

कोरोना से बचाव की जिम्मेदारी सबकी, यह समझने की जरूरत

भारत के लोगो को कोरोना महामारी के साथ जीने की आदत डालनी होगी। ये कहना है डब्ल्यूएचओ के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सौम्या स्वामीनाथन का। भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश के लिए डॉ. सौम्या का पिछले वर्ष दिया गया ये बयान कई मायनों में बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि कोरोना विगत 2 वर्षों में कई वेरिएंट में सामने आया है तथा आगे भी समय समय पर इसके नए वेरिएंट सामने आते रहने की पूरी संभावना है। कोरोना की दूसरी लहर में हुई मौतों के आंकड़े वास्तव में भयावह थे, जिन्हें देखते हुए हमें अत्यधिक सावधानी रखने की जरूरत है, क्योंकि त्योहारों के इस देश मे हर पर्व को बड़े धूमधाम से मनाने की परंपरा रही है, चाहे वो कुम्भ हो, छठ पूजा हो या फिर होली, दीवाली या उर्स आदि हो। अब त्योहार हो और भीड़ ना हो, ये कैसे हो सकता है और यही भीड़ कोरोना की सबसे बड़ी संवाहक है।

साधारणतया हम कोरोना के लिए जिम्मेदारियां हस्तांतरित करने में ज्यादा यकीन करने लग गए हैं, मसलन सरकारों के द्वारा जनता को जिम्मेदार बताना एवं जनता के द्वारा सरकारों को जिम्मेदार बताना। मेरा मानना है कि सरकार को पूर्ण रूप से जिम्मेदार ठहराने के बावजूद कोरोना से बचाव की जिम्मेदारी से हम जरा से भी मुक्त नहीं हो सकते, क्योंकि अंतोत: यह हमारे एवं हमारे परिवार के जीवन से जुड़ा मसला है। सरकारों का क्या है, हर 5 साल में बदल सकती है, परन्तु हमारे जो प्रियजन इस बीमारी से काल कवलित हो गए, वो कभी लौट के नहीं आएंगे।

बेहतर है, कि मास्क को अपने जीवन का अंग बनाए, टीकाकरण अवश्य कराएं, कोरोना के लक्षण दिखते ही जांच कराएं एवं स्वंय को कुछ दिनों के लिए अन्य लोगों से अलग कर दें तथा नैतिक जिम्मेदारी समझते हुए कोरोना के केस बढ़ने के साथ ही भीड़भाड़ में जाने से बचे।

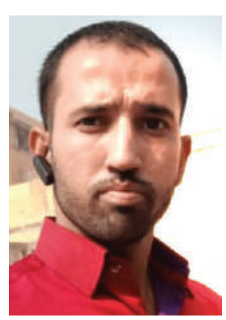

प्रकाश जांगिड़ 'प्रांश'
युवा साहित्यकार
राजसमन्द
मो. 96802-23113

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

कहानी

प्यार के रंग

तुम्हारी आंखें हैं न बिल्कुल नदी जैसी हैं। मैं इनमें डूब जाना चाहता हूं और तुम्हारा हाथ पकड़कर ही इस दुनियां के सुख और दुख को सह कर अंतिम सांस तुम्हारे कांधे पर ही सिर रखकर लेना चाहता हूं। कोर्ट से उखड़े पैरों बाहर निकलती अदिति पीयूष की बातें याद करती आ रही थी, जो उसने शादी की पहली ही रात को उसके कांधे पर सिर रखकर उसकी आंखों में झांकते हुए कहा।

इतना प्यार करते हो मुझसे! अदिति ने खनखनाती आवाज में शरमाते हुए पूछा ।

हां भई तुम हो ही इतनी खूबसूरत।

कैसी खूबसूरत?

तुम्हारा एक एक अंग जैसे संगमरमर से तराशा गया हो।

हूं और मेरा मन?

जब तन खूबसूरत है, तो मन तो होगा ही।

अच्छा।

हां।

लेकिन मेरे प्यारे पतिदेव खूबसूरती की परिभाषा सबके अनुसार अलग अलग ही तो होती है। तुम मुझसे प्रेम करना मेरे इस तन से नहीं।

अदिति की बात सुनकर पीयूष सकपका गया ।

हां भाई तुम्हारे तन मन और धन सभी से प्रेम करूंगा।

धन?

अरे हां यार तुम्हारा सब कुछ मेरा और मेरा तुम्हारा ही तो है। पीयूष ने अदिति को समझाते हुए कहा।

और फिर दोनों एक दूसरे के आगोश में को गए पता ही नहीं चला। खुशी के दिन जिंदगी में सुलगती गर्मी में हवा के ठंडे झोंके की तरह होता है, जो बस कुछ पलों में ही सिमटा रहता है।

अदिति को कुछ दिनों से पूरे शरीर में जलन सी महसूस हो रही थी और फिर धीरे धीरे उसके पूरे शरीर पर चकत्ते से पड़ गए जो बहुत इलाज कराने के बाबजूद भी ठीक नहीं हो पा रहे थे ।

धीरे धीरे पीयूष भी उससे कतराने लगा। अदिति वैसे भी बीमारी के कारण चिड़चिड़ी हो चुकी थी और ऊपर से पीयूष का रूखापन उसको जिंदा लाश बनाने के लिए काफी था।

धीरे धीरे अनबन इतनी बढ़ गई दोनों के बीच की एक दूसरे की शक्ल से ही नफरत हो गई और फिर पीयूष एक दिन अदिति से बोला।

अदिति हम दोनों ही एक दूसरे से खुश नहीं... !

दोनों नहीं ...यह कहो कि आप मुझसे खुश नहीं हैं। अदिति ने पीयूष की बात को बीच में ही काटते हुए कहा।

तुम जो भी समझो।

यही सच है।

हां बाबा, मुझे मुक्ति चाहिए तुमसे...। तलाक दे दो मुझे। पीयूष के इतने कटीले शब्द सुनकर अदिति रो पड़ी ।

लेकिन पीयूष पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

और फिर दोनों की रजामंदी से तलाक की अर्जी लग गई।

इतनी बड़ी चढ़ी प्रेम की बातें करने वाला पीयूष इतना बुरा होगा अदिति ने सोचा भी नहीं था ।

अरे बुढ़ऊ मरोगे क्या? किसी के शब्द उसके कानों में पड़े तो अंजली वर्तमान में लौटी। सामने एक बुजुर्ग व्यक्ति जिसके हाथ में एक थैली लगी हुई थी सड़क पर पड़ा था।

अदिति भागकर उनके पास गई उनको उठाया।

कैसे बोलते हैं आप बुजुर्ग लोगों से। अंजली ने उन अंकल जी को उठाते हुए कहा। लेकिन वह आदमी कुछ नहीं बोला और बेशर्मी से हंसता हुआ आगे बढ़ गया।

अंजली पकड़कर उनको सड़क के पार लाई।

इसमें क्या है अंकल जी? उन बुजुर्ग के हाथों में लगी थैली की ओर इशारा करते हुए कहा।

खाना से म्हारी बुड्ढी का।

क्या हुआ उनको?

बीमार...।

आप अकेले देखभाल कर रहे हैं उनकी?

हां, मैं यों पुच्छों हूं कि और कौड़ करे सै। अरे पुड़ी की पुड़ी जिंदगी तो उसने म्हारे संग बिताई। अब सेवा या तो वह मेरी करेगी या बाकी मैं! उन्होंने हंसते हुए कहा।

अदिति की आंखें भर आई।

प्यार ऐसा ही होता है। उसके दिल ने कहा।

राशि सिंह
मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

प्रतिक्रिया

क्या खुद की विफलता को छिपाने के लिए राजसमंद के राजनेता दे रहे नाथद्वारा को दोष?

अपनी गलतियों का ठीकरा दुसरो के सिर पर फोड़ना हम भारतीयों का प्रिय शग़ल है, यही चीज आजकल राजसमंद के राजनीतिक गलियारों में दिखाई दे रही है, अपनी विफलता को छुपाने के लिए राजसमंद के राजनेता सारा दोष नाथद्वारा को देते है। अपनी नाकामियां छुपाने के लिए दो शहरों के बीच वैमनस्यता पैदा करने का कार्य ये राजनेता कर रहे है। यह बहुत पुराना फार्मूला है कि राजनीति अपनी छवि चमकाने के लिए विभिन्न वर्गों के बीच ईर्ष्या, द्वेष पैदा करते है।

वर्तमान मसला पशु चिकित्सालय नाथद्वारा स्थानांतरित होने का है जबकि यह 2013 में ही स्वीकृत हो चुका था तो क्या यह माना जाए कि राजसमंद के राजनेता कुम्भकर्ण की नींद सो रहे थे। इतने सालों तक राजसमंद में यह कार्य कराने का उनके दिमाग मे विचार ही नहीं आया। अब जब यह नाथद्वारा स्थानांतरित हो रहा है तो इनकी नींद जगी है। अभी भी यह सोये ही रहते अगर यह नाथद्वारा स्थानांतरित नहीं होता। सात वर्ष से राजसमंद में संचालित बहु उद्देशीय चिकित्सालय का भवन बनाने के लिए एक कदम भी नहीं चल पाए, मगर इन नेताओं को दर्द इस बात का हो रहा है कि यह नाथद्वारा कैसे चला गया?

तो यह महज ईर्ष्या ही है कि नाथद्वारा में विकास कार्य इतने द्रुत गति से कैसे हो रहे है, यह ईर्ष्या अब कुंठा का रूप ले चुकी है। हर विधायक अपने क्षेत्र का भरपूर विकास करना चाहता है। इसलिए वह मौजूद संसाधनों को अपने क्षेत्र में उपलब्ध कराना चाहता है। राजसमंद के राजनेता बिल्कुल नाकारा साबित हुए है इसलिए दो शहरों के लोगो के बीच वैमनस्य के बीज बो रहे है। विकास तो जिले के सभी शहरों में होना चाहिये। ये बस अपने अपने क्षेत्र के विधायक की क्षमता की बात है। हम नाथद्वारा वासी सौभाग्यशाली है कि हमारे विधायक डॉ सीपी जोशी है जो पूरे मनोयोग एवं पूर्ण क्षमता के साथ क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध है, महज इनके विकास कार्यो को देख कर राजसमंद के राजनेता चिल्लपो मचा रहे है। राजसमंद के राजनेता भी पूरी ईमानदारी से अपनी कार्यक्षमता बढ़ाये, क्षेत्र का विकास करें, हवाई किले न बांधे, आम जनता को गुमराह न करे। आखिर नाथद्वारा शहर भी राजसमंद जिले का ही अंग है इसके विकास से भला ये ईर्ष्या कैसी ....

खरगोश को अपनी तेज चाल पर घमंड होता है इसलिए वो सो जाता है लेकिन कछुआ अपना कर्म करते हुए निरंतर चलता हुआ बाजी जीत लेता है। यह कहानी भी कुछ ऐसी ही है।

खैर...

अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत!!

ललित सनाढ्य
वरिष्ठ साहित्यकार नाथद्वारा

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
उत्तरप्रदेश - एस.एन. कुंवर - 77259-99777
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

राजसमंद आज कल और कल

आइए जानें अपने शहर को

पिंजर, पंख और परवाज़ बनाम कांकरोली

जन इतिहास से जुड़कर इतिहास की रचना होती है, ऐसा विगत अंक में कहा गया है। यह रचना इतिहास के उन चरित्र नायकों के सुकृत्यों से होती है जो जनता के दिलों पर अमिट छाप छोड़ते हैं। वि.सं.1924 से 1974 का समय इस दृष्टि से न केवल कांकरोली बल्कि नाथद्वारा के इतिहास में दूरगामी प्रभाव उत्पन्न करने वाली जनहित कारी योजनाओं के प्रकाश में आने का युग कहा जाना चाहिये।

उदयपुर रियासत में यह राणा सज्जनसिंहजी व फतेहसिंह जी, कांकरोली में पद्मावती जी और उनके द्वारा गोद लिये बालकृष्ण लालजी और नाथद्वारा में गोवर्धनलाल जी की संयुति से मेवाड़ के नवोन्मेष का यह समय रहा। वल्लभ कुलीन गोस्वामी कुल अपने अपने नगर और क्षेत्र का विकास करने की एक नयी व्यूह रचना बनाकर आगे बढ़ने के कुछ मौलिक प्रयास कर रहे थे। जिसे 'परदेस करना' कहते थे। इससे वैष्णव सृष्टि संख्यात्मक दृष्टि से बढ़ रही थी जिसका अंतिम लाभ कांकरोली और नाथद्वारा को आर्थिक समृद्धि, धार्मिक पर्यटन और इन नगरों की राष्ट्र स्तर पर नयी पहचान थी। कांकरोली में यह कार्य बड़े उत्साह से पद्मावती जी और छोटी व्यय के होने के बावजूद बालकृष्णलाल जी बखूबी कर रहे थे।

'परदेस' ने मेवाड़ के इन धर्म क्षेत्रों को जो पहचान दी, वही आज हम क्षेत्रवासियों को बदले में अवर्णित बहुत कुछ दे रहा है क्योंकि तब जो भी प्राप्य था वह इन धर्म स्थलों व नगरों के भौतिक व संस्थायी विकास के निमित्त समर्पित हो जाता था। काशी,गुजरात, खानदेश, बुरहानपुर, ब्रज प्रदेश आदि ऐसे ही सहयोग क्षेत्र थे। ये ही वे 'परदेस' थे जो पुष्टि तीर्थों की सर्वत्र प्रतिष्ठा के कारण बने।

श्री बालकृष्णलाल जी का समय जन सुविधाओं के द्वार खोल देने की सदाशयता का युग था। वि.सं. का चालीस का दशक अनेक कालजयी योजनाओं के प्रकाश का वर्ष था। घोड़ों, रथों को व्यवस्थित रखे जाने के लिये 'पायगा' का निर्माण कराया गया जो आगे जाकर घोड़ा वाली धर्मशाला में बदल गया। इस जन सुविधाकारी अतिथि गृह की आज की भौतिक स्थिति देख संभवत हमें सोचने का विषय है कि शताब्दी बीतने के बाद भी हमारी यह नागरिक सुविधा वैसी की वैसी क्यों ? क्या यही विकास है ? कहते है, एक गणगौर घाट भी तब बनाया गया था। आज वह कहां है, पता नहीं।

बालकृष्णलाल जी की पूर्व परंपरा में गिरिधरलाल जी ने नगरवासियों के मनोरंजन हेतु विट्ठल विलास बाग के अंदरुनी भाग में एक छोटा सा मन्दिर बनवाया था जिसका विस्तार श्रावण सुदी 13,वि.सं.1935 में पद्मावती ने बालकृष्णलाल जी के समय करा दिया था। यह बहुत विशाल था। कालांतर में यहां एक बिजलीघर भी बना जो मंदिर की ओर से नगर को 'प्रकाश युग' की अनुपम भेंट था।

धार्मिक पर्यटन के केन्द्र द्वारकाधीश मंदिर को विशाल महल का लुक देते हुए वि.सं.1945 में विशाल द्वार और नगारखाना बनवाया गया। हवेली या कीर्तन संगीत को इस नगर की विशिष्ट पहचान बनाने के लिये यहां से कीर्तन संगीत का नियमित और चरण बद्ध प्रसारण किये जाने की प्रबल संभावनाएं हैं। बस, इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। यही क्यों, बालकृष्णलाल जी के इस युग में नगर की उत्सव संस्कृति को मंदिर से बाहर ला विस्तार देने हेतु प्रयास किये गये थे। यह सातत्य बनाकर बाग को श्रीमंत और सामान्य जन के बीच एक सेतु बनाये जाने की प्रबल संभावनाएं हैं। पुन: यही, बस, इच्छा शक्ति की आवश्यकता है।

यह युग कांकरोली के लिये चुनौतियों का भी युग रहा। वि.सं.1956 में तब भीषण अकाल के दंश से मेवाड़ धरा कांप उठी थी। महंगाई की कमर तोड़ विभीषिका ने नगर की निर्धन जनशक्ति को चौराहे पर ला खड़ा किया। मंदिर और उदयपुर दोनों के सहयोग से तब बाहर से अनाज मंगाया जाने लगाए दानशालाएं खोली गयीं शहर के बाहर आसोटिया व सूरजपोल के बीच जनता को प्रतिदिन घूघरी वितरण किया गया। प्रदूषित और अधपकी फसल के सेवन ने हेजा महामारी का प्रकोप कर दिया। वि.सं. 1961 के आते आते प्लेग का आक्रमण हो गया। विट्ठल विलास और बाहर खेतों, रावली पाटी,एमड़ी, भाटोली तक जनता जनार्दन को शिफ्ट कर दिया गया। मेडिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर को तब स्थानीय वैद्य, डाक्टर और उदयपुर से आगत मेडिकल टीम के द्वारा सुव्यवस्थित बनाये रखने की जो कवायद की गयी होगी, उस व्यथा कथा को सुनाने वाली जिह्वा और रुलाने वाली आंखें नहीं हैं आज।

कहा जाता है कि समय शिकारी की मानिंद होता है। वह शिकार करता है और निशान छोड जाता है। जन संवेदना से जुड़े उक्त अकाल और प्लेग के निशान अब नहीं रहे जो उस समय की रोती कलपती आंखों के आंसुओं से हमारी बातचीत करा दें। हां, इन पंक्तियों को लिखते हुए मुझे लगने लगा है कि घटना, संघटना और दुर्घटनाओं के अभिलेख संरक्षित होना जरूरी है। कुछ लोग घटना बनकर जन्म लेते हैं, घटना बनकर जीते हैं और घटना बनकर चले जाते हैं/ कुछ लोग घटना बनकर जन्म लेते हैं, व्यक्ति बनकर जीते हैं और अपनी खुश्बू से सभी के लिये स्मरणीय बन जाते हैं और बहुत कम लोग घटना बनकर जन्म लेते हैं, व्यक्ति बन जीते हैं और विचार प्रवाह बन सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हो जाते हैं। घटना, व्यक्ति और विचार के खजाने खोजता यायावर लेखक इतिहास के दस्तावेज के भाव-अभाव के बीच उस मुकाम की खोज में था जो मुझे घूघरी की पंगत में मिला। वहां घटना भी है, व्यक्ति भी हैं और विचार प्रवाह का रेला भी है- सूरजपोल से आसोटिया के बीच अकाल की विभीषिका में जूझते जरूरत मंदों को बंटती घूघरी और विट्ठल विलास बाग की अमराइयों के नीचे अकाल और प्लेग के खत्म होने की बाट जोहता जन सैलाब। पिंजर और पंख के बीच हौंसले की उड़ान। कांकरोली के ये जन संवेदना से जुड़े विषय हम नगर जन के लिये महत्वपूर्ण हैं।

शेष.... अगले अंक में

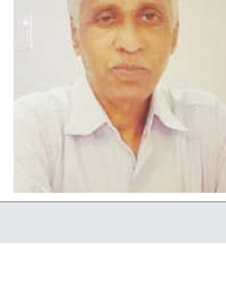

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार द्वारकेश मार्ग,
कांकरोली, मो. 9460252308

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरों...

सूरदास सदैव भावुक कर देते हैं आश्चर्य में डाल देते हैं। श्रीकृष्ण का स्वरूप उतनी गहराई से उनके सम्बन्धियों ने भी नहीं देखा होगा, जितना अंधे सूरदास ने देख लिया था। ईश्वर पर सबसे अधिक अधिकार उसके भक्त का ही होता है शायद...

अष्टछाप के कवियों के लिए कहा जाता है कि वे पूर्वजन्म में श्रीकृष्ण के आठ बालसखा थे, जो कलियुग में आठ कृष्णभक्त कवियों के रूप में जन्म लिए। ये थे कुम्भनदास, परमानन्द दास, कृष्णदास, सूरदास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुज दास, और नन्ददास... इन्हें पूर्वजन्म में घटी घटनाएं याद थीं, इसीलिये ये ऐसे लिखते थे जैसे सारी घटनाएं इनके सामने ही घटी हों।

भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा के आधार स्तम्भ महाप्रभु बल्लभाचार्य जी ने सन 1565 ई. में अपने इन आठ शिष्यों को मिला कर अष्टछाप की स्थापना की थी। 1565 ई. का मतलब जानते हैं? 1565 ई वह कालखण्ड है जब साम्राज्य विस्तार के नशे में धुत्त अकबर उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों पर कहर ढा रहा था।

सब 1564 में अकबर ने गढ़-कटंगा पर आक्रमण किया जिसमें महारानी दुर्गावती की पराजय और मृत्यु के बाद अकबर के सामन्त आसफखान ने समूचे राज्य को तहस नहस करते हुए असंख्य हिन्दू प्रजा को मार दिया। तब चौरागढ़ की हजारों देवियों ने अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए जौहर किया था। उसके दो वर्ष पूर्व ही अकबर ने मेड़ता में भीषण कत्लेआम मचाया था और एक वर्ष बाद चित्तौड़ में तीस हजार सामान्य हिन्दू नागरिकों का सामूहिक नरसंहार कराया था। और इसी दुर्दिन में बल्लभाचार्य के ये आठ धर्मयोद्धा हाथ में सारंगी ले कर धर्म की रक्षा के लिए गांव गांव घूमने निकले थे।

सैनिक केवल वे नहीं होते जो अपना प्राण दाव पर लगा कर सीमाओं पर लड़ते हैं। योद्धा वे भी होते हैं जो अपना सुख दाव पर लगा कर समाज में विधर्मी वर्चस्व से लड़ते हैं। ये वे प्रभावशाली लोग थे, जिन्होंने अरबी तलवारों और शासकीय लूट से त्रस्त हिन्दू प्रजा के हृदय में धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा उत्पन्न की। ये वे लोग थे जिनके कारण मुगल और तुर्क चाह कर भी भारत में वह काम नहीं कर सके, जो वे करना चाहते थे। सूरदास इनमें सर्वाधिक शक्तिशाली सिद्ध हुए थे। यह भी अद्भुत ही है कि जब हम जब सूरदास की रचनाएं पढ़ते हैं तो लगता है कि उन्होंने कृष्ण के बाल स्वरूप और प्रेमी रूप को मन में बसाया था, पर जब हम उस युग की परिस्थितियों का आकलन करते हैं तो लगता है उन्होंने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश देते भगवान श्रीकृष्ण को अपनाया था।

सूरदास को पढिये तो लगता है वे नास्तिक को भी कृष्ण भक्त बना देंगे। कौन है जो नन्द-यशोदा और गोपियों का वियोग पढ़ कर न रो पड़े... कौन है जो बालक कृष्ण की लीलाएं देख कर खिलखिला न उठे... कौन है जो सूरदास की भक्ति देख कर भक्त न हो जाय। सूरदास जन्मांध थे। समाज में अंधे सबसे निरीह प्राणी समझे जाते हैं। पर वह अंधा जानता था कि 'कौन है जो अंधों को भी भवसागर के पार उतारता है।' उस अंधे ने चुपके से कन्हैया की उंगली पकड़ ली... उसके बाद फिर क्या सोचना! कन्हैया से अच्छा मित्र जगत में और कौन हुआ है? उनकी उंगली पकड़ कर सूरदास वहां पहुंच गए जहां विरले ही जा पाते हैं।

कभी कभी लगता है, सूरदास केवल इसलिए वह उच्च स्थान पा गए क्योंकि उन्होंने संसार की ओर से आंखे बन्द कर ली थी। मनुष्य जब तक संसार को देखता है, तब तक ईश्वर नहीं दिखते। बाकी तो सब हरि इच्छा...

सर्वेश कुमार तिवारी
साहित्यकार
गोपालगंज, बिहार

सहजो बाई की गुरु भक्ति

आज सहजो अपनी कुटिया के द्वार पर बैठी है, उसकी गुरुभक्ति से प्रसन्न होकर परमात्मा प्रकट हुए हैं पर सहजो के अन्दर कोई उत्साह नहीं कहा सहजो हम स्वयं चलकर आऐ हैं तुम्हे हर्ष नहीं, सहजो ने कहा प्रभु ये तो आपने अहेतु ऋपा की है, पर मुझे तो आपके दर्शन की भी कामना नहीं थी। परमात्मा को झटका लगा ऐसा तेरे पास क्या है जो तू मेरा आतिथ्य भी नहीं करती । तो सहजो ने कहा- मेरे पास मेरा सद्गुरु समर्थ है, मैंने तुम्हे अपने सद्गुरू में पा लिया है, मैं परमात्म तत्व का दर्शन भी करना चाहती हूं तो केवल अपने सद्गुरु के रूप में, मुझे आपके दर्शनो की कोई अभिलाषा नहीं है, यदि मैं गुरुदेव को कहती तो वह कभी का तुम्हे उठाकर मेरी झोली में डाल देते। ये भाव देखकर आए हुए परमात्मा भी पिघल गये, कहा सहजो मुझे अदंर आने के लिए नहीं कहोगी।

सहजो कहती है प्रभु मेरी कुटिया के भीतर एक ही आसन है और उस पर भी मेरे सद्गुरु विराजते हैं, क्या आप भूमि पर बैठकर मेरा आतिथ्य स्वीकार करेंगें। तुम जहां कहोगी वहां बैठेंगें, भीतर तो आने दो, प्रभु ने कहा। देखा सचमुच एक ही आसन है, भूमि पर बैठ गया ठाकुर, कहा सहजो मैं जहां जाता हूं कुछ न कुछ देता हूं ऐसा मेरा नियम है, कुछ मांग लो। सहजो कहती है मेरे जीवन में कोई कामना नहीं है। प्रभु ने कहा, फिर भी कुछ तो मांग लो, तो कहा ठाकुर तुम मुझे क्या दोगे तुम तो स्वयं एक दान हो, जिसे मेरा दाता सद्गुरु किसी को भी जब चाहे दान कर देता है।

अब बताओ दान बड़ा या दाता। तुमने तो जन्म, मरण, रोग, भोग में उलझाया, ये तो मेरे सदगुरु ने कृपा कर सब छुड़ाया। प्रभु- सहजो आज मेरी मर्यादा रख ले, कुछ सेवा ही दे दे। कहा प्रभु एक सेवा है, मेरे सद्गुरु आने वाले हैं, जब मैं उन्हे भोजन कराऊं तो क्या आप उनके पीछे खड़े होकर चंवर डुला सकते हो ? कथा कहती है प्रभु ने सहजो के गुरु चरणदास पर चंवर डुलाया।

यह सजोबाई का जीवनी परिचय

सुश्री सहजोबाई का जन्म ढूसर भार्गव कुल में वि. सम्वत् 1782 को श्रावण शुक्ल पंचमी रविवार 25 जुलाई 1725 ई को दिल्ली के परीक्षित पूरे नामक स्थान में हुआ था। आपके पिता हरिप्रसाद व माता अनूपी देवी थी। आप अपने चारों भाइयों से सबसे छोटी थीं। प्रचलित प्रथा के अनुसार लगभग 11 वर्ष की अल्पायु में ही सुश्री सहजोबाई का संबंध दिल्ली के भार्गव परिवार में तय कर दिया गया, जबकि वह विवाह कर गृहस्थी बसाना नहीं चाहती थीं। विवाह के अवसर पर वर एवं कन्या को आशीर्वाद देने चरणदास जी को भी आमंत्रित किया गया था। दुल्हन के रूप में सजी संवरी सहजोबाई को देखते ही त्रिकालदर्शी संत चरणदास ने कहा-

सहजो तनिक सुहाग पर, कहां गुदाए शीश,
मरना है, रहना नहीं, जाने विश्वे बीस।

इनके वचन सुनते सुनते ही सहजो ने शृंगार उतारते हुए बोली मैं विवाह नहीं करूंगी। न तो संत की भविष्यवाणी और न ही ईश्वर की इच्छा व होनी को कौन टाल सका। आतिशबाजी के कारण बारात में घोड़ी के बिदक जाने और पेड़ से टकराने के कारण वर की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई। इस दु:खद घटना और संत के वचन सुनकर सहजो बाई उनके माता- पिता और चारों भाई उनके शिष्य हो गए। साथ ही गुरू भक्ति को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना दिया।

भैंस के ट्रांसफर से दुःखी जनता

अखबारों में भैंस के ट्रांसफर की खबर पढ़कर जनता अथाह दुख में डूब गई। चाय और पान की टपरी पर विषय तय हो गया। जिसने अखबार पढ़ा टपरी की ओर दौड़ पड़ा। टपरी सौहार्द्र और वैमनस्य स्थापित करने का स्थान है। चुनाव विश्लेषण से लेकर कलेक्टर के ट्रांसफर तक की चर्चा होती है। ऐसा पहली बार हुआ जब भैंस के ट्रांसफर पर चर्चा के लिए लोग टपरियों की ओर उमड़ पड़े।

जब से किसान का जन्म हुआए उसे मरखनी गाय से शिकायत रही, लेकिन काली भैंस का रिकॉर्ड दूध की तरह सफेद था। काली होने के बाद भी उसका कोई कारनामा टपरी पर चर्चा का विषय नहीं बना। भैंस और गधा दो प्राणी हैं, जिन पर अत्याचार करने वाले खुद दुखी हो जाते हैं। भैंस का मौन रहना उसकी जातिगत विशेषता है। भैंस मंत्री की तरह होती है। समस्याओं की कितनी ही बीन बजाते रहोए टस से मस नहीं होती। इसके बावजूद निर्वाचन आयोग ने किसी भी उम्मीदवार को गधा या भैंस का चुनाव चिन्ह नहीं दिया। जो अत्याचार के खिलाफ आवाज़ उठाता है, उसे सुना जाता है। गाय मरखनी है, निर्वाचन आयोग भी डरता है।

भैंस सरकारी आदमी नहीं है, लेकिन उसकी तरह कामचोर और आराम पसंद है। वह सुविधा शुल्क लेकर काम कर देता है, लेकिन भैंस को सुविधा शुल्क भी आकर्षित नहीं करता। उसे तो आराम पसंद है। लाचार पत्नी की तरह जो डाल दिया वह खा लिया। चारा हो या मार। कभी जंगल जाने की इच्छा व्यक्त नहीं की। जो जंगली हैं वे ही जंगल में रहते हैं। इच्छा हो तो नहला दो। जनता और भैंस दुहने के काम आती है।

भैंस मानवीय गुणों से हमेशा दूर रहती है। उसे मक्कारी, धूर्तता, चालाकी और नालायकी देना नहीं आता। वह स्वामी भक्त नहीं है। जिसके खूंटे बंधी है, उसकी है। वह हमेशा सत्ता पक्ष में बैठे व्यंग्यकार की तरह दूरदर्शी होती है। वह अपनी सरकार के खिलाफ पूंछ तक नहीं हिलाती। लिखने का तो सवाल ही नहीं है। वह कैसे लिख सकती है? लिखने के लिए पढ़ना जरूरी है। पढ़ी लिखी होती तो भैंस क्यों होती?

भैंस साम्प्रदायिक सौहार्द्र का सबसे बड़ा प्रतीक है। आज तक विश्व में उसे लेकर डंडे अवश्य चले हो, लेकिन कभी साम्प्रदायिक वैमनस्य नहीं बढ़ा। किसी भी मजहब (भारत में) के झंडे का रंग उससे रंग से मेल नहीं खाता। मातमी ड्रेस में सजी रहती है, लेकिन किसी मातम का कारण नहीं बनी। त्योहार किसी का हो उसे नहीं सजाया या पूजा गया। दूध पीने वाले लाखों हैं, लेकिन उसकी पूजा करने वाला कोई नहीं। महानायक हो या गंगा उसकी सभी सवारी करते हैं। भैंस को कभी हिरोइन की तरह मटकते नहीं देखा। शालीनता में उसका कोई सानी नहीं। जब भी उसने सर हिलाया कोई समझ नहीं पाया कि स्वीकृति है या अस्वीकृति। भैंस साधू नहीं है, लेकिन प्रकृति साधू की होती है। मिल गया तो खा लिया नहीं तो कोई बात नहीं।

गरीब की जोरू और भैंस से सभी को सहानुभूति हो जाती है। गर्मी हो या सर्दी भैंस पानी में जरूर जाती है। जिनकी भैंस पानी गयी है वे अच्छी तरह जानते हैं कि जब भैंस पानी में चली जाए तो क्या करना चाहिए। भैंस अपनी मर्जी से पानी में नहीं जाती। पानी उसे ठिये पर दिखाया जा सकता है। पानी में बैठने की तीव्र इच्छा मालिक समझता है। पानी में जाने से बीमार भी पड़ सकती है। छोटा– मोटा इलाज तो मालिक और गांव का ढोर पालक ही कर देता है, लेकिन बीमारी बढ़ जाए तो ढोर डॉक्टर को दिखाना जरूरी हो जाता है।

ढोरो का अस्पताल था, तब तक भैंस और मालिक खुश थे। भैंस बीमार पड़ी, लेकिन अस्पताल का ट्रांसफर दूसरे शहर कर दिया। अब भैंस का ट्रांसफर तय हो गया। ढोरों का अस्पताल वहीं होता है, जहाँ ढोर रहते हैं, अब जहां अस्पताल होगा, वहीं ढोर ले जाने पड़ेंगे।

भैंस के ट्रांसफर से सभी दुखी हो गए। अब किसके आगे बीन बजायेंगे, किसकी भैंस पानी में जाएगी? अक्ल की तुलना किससे करेंगे? अस्पताल का ट्रांसफर प्रशासन के गले में हड्डी की तरह लटक रहा था। गांव वालों का कहना था, वहां ढोर बढ़े तो दूसरा ढोरों का अस्पताल खोल देने से क्या सरकार की भैंस पानी में चल जाती?

सुनील जैन राही
वरिष्ठ व्यंग्यकार
मो. 9810 960 285

जनसहभागिता और स्वार्थ

जनसहभागिता एक ऐसी धारणा है, जिससे मनुष्य और उसके कार्यों को प्रगति दृढ़ता प्राप्त होती है। अब ये जनसहभागिता किस बला का नाम ले लिया। मैंने, हम तो जानते ही नहीं की ये क्या है? हमें तो केवल यह ज्ञात है कि (मेरा कार्य) हमेशा हर कोई विचार करता है कि पूर्ण हो जाएं बस। मनुष्य के जीवन में ऐसे कई कार्य है, जिन्हें हम जनसहभागिता के माध्यम पूर्ण और सफल रूप से कर सकते हैं। अब जनसहभागिता से कई कार्य किए जा सकते हैं और शायद हम एक विचार तो कर ही लेते हैं अथवा एक संकल्प ही ले लेते हैं कि यह कार्य हम मिलकर कर सकते हैं या करेंगे, परंतु क्या यह संकल्प अथवा एक पर्चे पर लिखी गई बात हम दृढ़ता से मानतें हैं अथवा स्वीकार करते हैं ?

अतिशयोक्ति यह हैं कि बस हम पढ़ अथवा लिख देते हैं। इसके बाद कौन पूछेगा? जैसे मैं अपने शहर में जाता हूं तो कई विचित्र दृश्य देखने को मिलते हैं। कोई दुकानदार झाड़ू निकाल रहा है। ऐसा क्यों? क्योंकि उसे अपना प्रतिष्ठान स्वच्छ, सुंदर रखकर ग्राहक रूपी भगवान को आमंत्रित करना है और भी नाना प्रकारों से आकृषित करना हैं। अब जरा सोचिए जो व्यक्ति झाड़ू निकलता है वो कचरा कहां डालता है? दुकान के पायदान पर बनी नाली में सरका देता है और अपना कार्य इतिश्री समझ कर रह जाता है। अब देखा जाए तो कितने इस कार्य में सहभागिता निभाते हैं? (कहना नही चाहता...) और अन्तत: वर्षा ऋतु में वह नाली मिट्टी, प्लास्टिक थैली, चाय कप (डिस्पोजल) से भरी रहती है। साथ ही सोने पर सुहागा नाली अवरूद्ध हो जाती है।

तब जनसहभागिता निभाने वाले कहते हैं कि सरकार कुछ नहीं करती? (यह अंदेशा न हो कि मैं किसी राजनैतिक दल का समर्थक हूँ) अरे! महानुभावों हम इस समस्या का सहयोग कर निस्तारण कर सकते हैं। जनसहभागिता कि अनुभूति और विचार को हम मूर्त रूप दें सकते हैं, परंतु समस्या कहां हैं हमारे दिमाग में ही ना? क्या ये जनसहभागिता की श्रेणी में नही आएगा कि हम कचरा कचरापात्र में ही डालें और अन्य प्लास्टिक, कचरें का सही और उचित निस्तारण करें। तब ही हमारा शहर साफ, स्वच्छ होगा और आगुन्तकों की दृष्टि में हमेशा विद्यमान रह सकेगा। यह कार्य कोई सरकार नही कर सकती, जनसहभागिता और सरकार की नीतियां परस्पर मिलकर ही इसे पूर्ण कर सकती हैं, परंतु आधुनिक और विकसित होते हमारे समाज ने कितना किया और करने का प्रयास किया हैं? हमारे समाज और जनसहभागिता से किसे और क्यों कर कोई सरोकार रहे? अगर हमारा कोई सरोकार न रहे तो यह जनसहभागिता कैसे और कहां रह सकती हैं और हमारा समाज कैसा होगा? सोचता हूं किसी स्वार्थ अथवा मेरे क्या करना है अथवा तुम्हारे क्या करना है, के नीचे दब गई होगी? और उस जनसहभागिता ने अन्तत: दम तोड़ दिया होगा। तभी तो चहुंओर नजर दौड़ाते हुए भी दिखाई देती ही नहीं! बस सरकार जाने... प्रशासन जाने।

इस शहर में और यात्रा करते समय कई शहरों, गांवों में धार्मिक यात्रा पर जाने वालों के लिए भामाशाह द्वारा सुविधाएं की जाती हैं अर्थात भोजन व्यवस्था की जाती हैं। पूरी व्यवस्था और उनकी सेवा भाव को देखकर मन बढ़ा ही प्रसन्न होता हैं। एकाएक उन भामाशाहों पर मेरी श्रद्धा उमड़ पड़ती है। कुछ दिनों बाद यह व्यवस्था पूर्णता को प्राप्त हो जाती है।

उसके बाद का नजारा देखने लायक होता है। चारों ओर गंदगी होती है, कोई ध्यान नहीं देता और वो सारा कचरा, डिस्पोजल ग्लास, पत्तल-दोने, प्लास्टिक थैलियां सारी की सारी ये अमूल्य वस्तुएँ बीच राह, बीच सड़क किनारे पड़ी रहती है। कोई वहाँ न तो कचरा कचरा पात्र में डालने के बारे में सोचता है ना ही व्यवस्थित करने के बारे में वाह! क्या जनसहभागिता हैं ? वहां भोजन की व्यवस्था जनसहभागिता ने कर दी, किन्तु स्व्च्छता की व्यवस्था करने में जनसहभागिता बोनी रह जाती हैं। हमारे समाज में व्यक्ति अपने कार्य को पूर्ण करने के बाद उस उद्देश्य को पूर्ण करने में लाई गई वस्तुओं और सहयोगी सामाग्री को नाकारा समझने लगता हैं? क्योकि वो सोचता है, मुझे जो करना था कर दिया। अब उससे किसी का नुकसान हो, चाहे वो प्रकृति पर्यावरण ही हो मुझे क्या करना है? इसके बाद कोई व्यक्ति, संस्था उत्तरदायी नहीं रहते। क्योंकि उन्होने तो जनसहभागिता का कार्य कर दिया है?

अब ये साफ सफाई का कार्य सरकार या सफाईकर्मी का है? हमारा कुछ लेना- देना नही। जनसहभागिता से किए कार्यों में अगर कोई त्रुटि रह जाए तो सरकार उत्तरदायी है। कोई व्यक्ति अथवा संस्था नहीं

(अब इसे कोई किसी भी दृष्टिकोण से देख सकता है?) मैं यह कहना चाहता हूं कि हम कोई भी कार्य सहभागिता से अथवा किसी व्यक्ति का सहयोग कर उस कार्य को उत्तम रूप से और सफल बना सकते हैं, तो हम आगे क्यों नही बढ़ते हैं? अब जैसे स्वच्छता, पीने का पानी, नाली निर्माण, नाली में कचरा न डालना, हर कंही थूंकना, दुकान के बाहर, ठेला वाला, चाय वाला ये सभी जगहें हम देखते है और कचरा भी डालते है और सरकार और दुकानदार को कोसते भी है कि कितनी गंदगी रखते हो भय्या? किन्तु ये सब देखने वालों और गंदगी फैलाने वालों में सुधार करने कि ईच्छा शक्ति का नितांत अभाव रहता है और ये पंक्ति अवश्य बोलेंगे मुझे क्या करना है अथवा मेरे क्या बिगड़ रहा है...। मैंने थोड़े ही किया था जो मैं करूं।

हम समस्याएं बढ़ने देते है परंतु इन कार्यों के निष्पादन का उत्तरदायित्व कोई वहन नहीं करना चाहता बस एक- दूसरे को कोसने का कार्य करते हैं। तो फिर कैसा जनसहयोग, कैसी जनसहभागिता? जब जनसामान्य कुछ ठान नहीं लेता कुछ परिवर्तन नहीं होने वाला। यहां तक कि पत्ता भी नहीं हिलाने वाला, सब बैठ जाएंगे तो कार्य कौन करेगा? सरकार और जनता एक होकर कार्य करें। सरकार अपनी योजनाओं पर दिशा निर्देश दें और कार्य करें वो भी जनता को साथ लेकर? परंतु यहाँ तो आलम है चुनाव से पूर्व जनता सर्वोपरि, चुनाव जीतने के बाद कुर्सी सर्वोपरि... जनता होती क्या है समझाओं? अब किसी को क्या लगे और कैसा लगे। मैं उस फेर में नहीं पड़ता हूँ। सभी केवल व्यष्टिगत होकर कार्य करते हैं, समष्टिगत होकर कार्य करने में उनकी सांस अटक जाती हैं। इसलिए ही तो जनसहभागिता केवल शब्द क्रीड़ा बनकर रह गई है और अंत में आजकल के इस फैशन के दौर की सच्चाई बखान करना चाहता हूं सुनें...। हम बनना चाहते हैं समाज कल्याणी, समष्टिगत किन्तु हमारे विचार और कार्यशैली केवल और केवल व्यष्टिगत कार्यों का ही समर्थन करती हैं।

डॉ. राजकुमार खटीक
प्राचार्य नागफणी महाविद्यालय
खेरवाड़ा, उदयपुर
मो. 99834-68329

आलम का आधार है हिंदी

भारती के सिर का ताज है हिंदी
माथे की बिंदिया है हिंदी।
गले का फूल हार है हिंदी।
पायल की झंकार है हिंदी।

फूलों का गजरा है हिंदी।
चूड़ियों की खनखनाहट है हिंदी।
तिरंगे की शान है हिंदी।
राष्ट्रगीत की आन है हिंदी।

तुलसी की क्यारी है हिंदी।
पूजा की थाली है हिंदी।
अमृत का कलश है हिंदी।
कुमकुम का तिलक है हिंदी।

वृक्षों की शीतल छांव है हिंदी।
सुमन की सुगंध है हिंदी।
कोयल का कूंजन है हिंदी।
भौंरे का गुंजन है हिंदी।

बरखा बहार है हिंदी।
बादल की घटा है हिंदी।
रिमझिम बारिश है हिंदी।
मंद शीतल समीर है हिंदी।

शिखरों की ऊंचाई है हिंदी।
सागर की गहराई है हिंदी।
सूर्य की आब है हिंदी।
पूर्णिमा का चांद है हिंदी।

शब्दों का सागर है हिंदी।
वाणी का वैभव है हिंदी।
गीतों की माधुरी है हिंदी।
संगीत की सूरावली है हिंदी।

आज़ादी का जुनून है हिंदी।
रणभेरी का नाद है हिंदी।
शहीदों की गाथा है हिंदी।
वीरों की वंदना है हिंदी।

कवियों की कारीगरी है हिंदी।
कलम की जादूगरी है हिंदी।
हास्य की फुहार है हिंदी।
व्यंग्य का कटुबाण है हिंदी।

तुलसीकृत मानस है हिंदी।
कबीर साहब की बानी है हिंदी।
मीरा की मधुरा भक्ति है हिंदी।
रहीम की दोहावली है हिंदी।

जन जन को जोड़ती है हिंदी।
अवरोधों को तोड़ती है हिंदी।
एक सूत्र में बांधती है हिंदी।
भाईचारे की भावना है हिंदी।

अपनेपन का एहसास है हिंदी।
रिश्तों की मीठास है हिंदी।
मूल्यों का विकास है हिंदी।
संस्कारों की सुवास है हिंदी।

ख्यालों की खूबी है हिंदी।
उल्फ़त का इज़हार है हिंदी।
गुफ़्तगू का लहज़ा है हिंदी।
अपनेपन का एहसास है हिंदी।

भटके हुए का रास्ता है हिंदी।
उन्नति की अभिलाषा है हिंदी।
संतों की साधना है हिंदी।
ईश्वर की आराधना है हिंदी।
जन- जन की आवाज़ है हिंदी।
संपर्क की भाषा है हिंदी।
रोम- रोम में बसी है हिंदी।
कण- कण में व्याप्त है हिंदी।

आदर्श- मानक भाषा है हिंदी।
समस्या का समाधान है हिंदी।
ईश्वर का उपहार है हिंदी।
आलम का आधार है हिंदी।

समीर उपाध्याय
मनहर पार्क, चोटीला, 363520
जिला- सुरेन्द्रनगर, गुजरात
मो. 9265717398

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

मुर्दा भीड़ और नेता

एक शहर में खुंखार चीता रात के अंधेरे में एक बार फिर एक लावारिस गाय को उठा ले गया। घनी आबादी के बावजूद गहरी नींद में सोए लोगों ने गाय की चित्कार भी नहीं सुनी या फिर सुनकर भी अनसुना कर दिया। क्योंकि खुंखार हिंसक जानवरों के सामने जाने की हिम्मत असली मर्द ही कर सकता है। गांवों में तो आज भी इस तरह के दिलेर मर्दो की कमी नहीं है, मगर शहरों में तो साहसी लोग नगण्य है। रात के घने अंधेरे में जब जरूरत थी, अपने साहस और पौरुष के प्रदर्शन की, तब एक बच्चा भी नहीं दिखा, मगर सुबह होते ही घर के आसपास भीड़ जमा होने लगी और देखते ही देखते घड़ियाली आंसू बहाने की होड़ मच गई। एक शख्स मुंह में ब्रश दबाकर गली में इधर उधर थूंकता हुआ बस पकड़ने की गति से दौड़ता हुआ घटना स्थल पर पहुंच रहा है, जैसे खुद सीबीआई जांच अधिकारी हो और उसके लेट होते ही सबूत के साथ कोई छेड़छाड़ हो जाएगी। एक महानुभव तो तमतमाते हुए चेहरे के साथ अपने हाथ में लाठी लेकर आए, जैसे वो जंगली जानवर इनकी लाठी खाने के इन्तजार में अभी भी यही बैठा हुआ हो। यह लाठी उन्होंने चीते के जाने के पांच घंटे बाद भी भय के कारण पकड़ी या दिखावटी साहस में, इस पर भी भ्रम बना हुआ है। इसी तरह एक और महाशय अपनी लूंगी को पैरों के बीच दबाकर आ धमके और आते ही सत्ता के विपक्षी नेता की तरह जंगलराज पर व्याख्यान देने लगे। एक महिला हाथ में दूध की केटली लिए अपने दिखावटी संवेदनाएं प्रकट कर रही है। कुछ लोग घर की खिड़की से तो कुछ लोग अपनी छत से देखकर घटना पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं। नेताओं की सभा में बैठने के लिए अच्छी जगह की खोज करती गुमसुम भीड़ की तरह कुछ बच्चें भी मुकदर्शक होकर घटना स्थल पर जगह देखकर बैठ गए। मोहल्ले की मुर्दा भीड़ घड़ियाली आंसू बहाने में एक दूसरे से मानो प्रतियोगिता कर रहे हो। लोग एक दूसरे से शिकायत कर रहे हैं कि मुझे जगाया होता तो यह स्थिति नहीं बनती। गली के एक से एक स्वघोषित समाजसेवक व बुद्धिजीवी को यह एक मंच मिल गया, जिसकी उन्हें अक्सर तलाश रहती है। सभी लोग अपनी योग्यता अनुरूप अभिनय कर रहे हैं। बहुत अच्छी गाय थी। कभी भी किसी के सामने सिंग भी नहीं उठाती थी। रास्ते जाती थी और रास्ते- रास्ते आती थी। जो जीवनभर उस गाय को सिर्फ दुत्कारता रहता और कभी रोटी भी नहीं दी वो भी अब उस गाय के लिए रोए जा रहा है। तभी क्षेत्र के नेता ने अपनी तेज गति से चलती गाड़ी में अचानक ब्रेक लगाकर चर्र की आवाज के साथ सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। अपने क्षेत्र में इतनी भीड़ को कोई अन्य सम्बोधित करें, यह एक सुर्खियां पसन्द नेता को कब स्वीकार होता, उसने आते ही एक जिम्मेदार जनप्रतिनिधि का परिचय देते हुए मोर्चा संभाला । जैसा कि सभी नेताओं के साथ हरदम कुछ चरण सेवक चिपके रहते हैं। जिनका कार्य नेताजी की स्तुति गान के साथ गरीब को केला देते हुए नेताजी का फोटो, वीडियो बनाकर प्रसारित करने का कार्य होता है। यहां भी सेवक ने तुरन्त मोबाइल निकाल इस इमोशनल सीन पर नेताजी के दमदार उद्बोधन को शूट करना शुरू किया। जिससे इस नाटक के सभी पात्रों को और अधिक उत्साह आने लगा। नेता जी ने आए दिन क्षेत्र में खुंखार जानवरों के बढ़ते आतंक पर अपने ओजस्वी शब्दों के बाण छोड़े। साथ ही चीते को अब दिन दहाड़े आने की चुनौती भी दी, जिसे सुनकर तालियों की बारिश होने लगी। उनके चरण सेवक ने शीघ्र ही इस वीडियो को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफोर्म पर डालकर एक सच्चे चरण सेवक चाटुकार का फर्ज अदा किया। अब तो सोशल मीडिया पर जन हितेषी नेता एवं गली के बहादुर युवाओं की जय जयकार की बाढ़ आ गई। नेताजी एवं गली की मुर्दा भीड़ मन ही मन चीते को धन्यवाद देने लगी, जिसकी बदौलत उनका नाम व क्षेत्र फेमस हो गया। तभी एक वृद्ध व्यक्ति बड़बड़ाने लगा, क्षेत्र में कोई मर्द नहीं सभी मुर्दा है। किसी को क्षेत्र की समस्या से कोई सरोकार नहीं है। सभी को सिर्फअपनी वाहवाही से मतलब है।

कविताएं

पन्नाधाय का त्याग

शौर्य और वीरता का प्रतीक
चित्तौड़गढ़
मेवाड़ का रक्षक
सजग प्रहरी
अनेक उतार चढ़ाव और
घटनाओं का मौन साक्षी
समय चक्र रूकता नहीं
इतिहास बनता है,
कुंवर उदयसिंह
मेवाड़ के भावी राणा को
पन्नाधाय ने
अपने बेटे चंदन के हिस्से का
दूध पिला कर पाला
गोदी में सुलाती नन्हें कुंवर को
बालक चंदन को बहलाती
उसे नीचे धरती पर सुलाती
दोनों एक जैसे ही थे
दोनों का पालन होता था,
कोई जगता रातों में
कोई दिन में सोता था,
पन्ना को दोनों प्यारे थे
पर कुंवर सभी से न्यारे थे ।
हिंसा से सत्ता हथिया कर
चित्तौड़ सिंहासन पर बैठा
पापी, छली, कपटी बनवीर
वह दुष्ट, क्रुर, कायर था
नहीं था वीर
लोभ प्रलोभन का
घूंट पिलाकर
कुछ लोगों को
अपने वश में कर लिया
उसे खटकता था कुंवर उदयसिंह
क्योंकि वह भावी राणा था मेवाड़पति
आगे पिछे एक न एक दिन
बनवीर को सिंहासन से हट जाना था
बनवीर घमण्डी, अभिमानी
सत्ता कें लालच ने अंधा कर दिया
दोड़ो दोड़ो, मारो काटो
आवाजों से हिल गया चित्तौड़
महल में मच गई भाग दौड़ ।
तभी एक सेविका
हेरान परेशान
घबराई सी दोड़ी आई
रूंध गया गला, क्या कहना है
जैसे तैसे कुछ कह पाई
धाय माता सुनो-
बनवीर इधर ही भागा आता है
वह हत्यारा कुंवरजी के खून का प्यासा है ।
पन्ना ने मुंह भींच लिया मजबुती से
दांतों से होठों को काट लिया
तन गई नसे माथे की
आंखों में अंधेरा छाया
टप टप अश्रुओं की बूंदों से
मुंह भीग गया, चुनर भिगी
बिन बदली के बरखा की लग गई झड़ी
अंदर बाहर तुफान उठा
भूचाल हुआ
धरती घूमी, अम्बर घूमा
फिरकी सी घूम गई क्षण में
अभी अभी तो उदय हुआ है
मेवाड़ का सूरज नहीं डुबेगा।
हंसने से पहले रोना पड़ता है
कुछ पाने के लिए
बहुत कुछ खोना पड़ता है।
किसी ईंट को गहरे नींव में
जाना पड़ता है
तभी महल का कंगुरा शोभा पाता है।
बहुत लुण खाया महलों का
इसका हक अदा करना है
मन ही मन सोच लिया पन्ना ने
कैसे क्या करना है
क्षण भर घबराई पन्ना
तुरन्त स्वयं को सचेत किया
यह समय नहीं घबराने का
यह समय नहीं पछताने का
आंखों से आंसू पोंछ लिया
क्या करना है यह सोच लिया।
अपने दिल के टुकड़े को गले लगाया
चूम लिया
प्यारे चंदन के मुखड़े को
दिल कड़ा किया पत्थर बनकर
बेटे चंदन को सुला दिया
कुंवर के बिस्तर पर
और कुंवर को साड़ी के
आंचल में छिपा दिया।
बातों बातों में आ गया बनवीर
हाथ में तलवार लिये
खून का प्यासा दुराक्रमी
अट्टहास हुंकार लिये
कहां कुंवर है ओरी पन्ना
तू जल्दी बतला देना
उसने सोचा कुंवर को रास्ते से हटाना पड़ेगा
पर बीच में हिमालय सी खड़ी स्वामी भक्त
पन्ना
यह नहीं होने देगी।
चाहे सब कुछ लुटाना पड़ेगा
तभी कुंवर के बिस्तर पर
बालक को सोते देखा
समझ लिया उसे उदयसिंह
खिंच गई भृकुटि रेखा
पन्ना की आंखों के आगे
तलवार चला दी थी उसने
नादान समझ भी ना पाया
किसको मारा है उसने
पन्ना ने दिल कड़ा किया आंसू पीकर
रोने का नहीं समय था
कहीं भेद ना खुल जाए
इस बात का भय था।
हाय रे नियति कैसी ये विडम्बना
अपने बेटे के मरने पर भी
रो भी न पाई थी पन्ना
विश्वस्त अनुचर के हाथों
कुंवर को बाहर भिजवाया
मेवाड़ बचे चाहे कुछ हो
अपने मन को समझाया
देश भक्त पन्ना जैसे ही
इतिहास बनाते हैं ।
अपना सब कुछ खोकर भी
देश बनाते हैं।

डॉ. देवकीनन्दन नन्दवाना
साहित्यकार, गणेशनगर
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 9166238059

स्मार्ट सिटी : मानसिक, आर्थिक और जीवन शैली का विकास

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर, कवि व लेखक
राजसमंद, मो. 9784652469

तेजी से भागती दौड़ती दुनिया में तेजी से बदलाव हमारे सामने दिखाई दे रहे हैं। वर्ष 2022 कई मायनों में हमारे लिए महत्वपूर्ण रहने वाला है। एक तरफ जहां हम महामारी से निपटने की पूरी तैयारी में लगे हैं वही स्मार्ट सिटी के सपने को पूरा करने की दिशा में पहला कदम इसी वर्ष पूर्ण करने की तैयारी भी रहेगी। 25 जून 2015 में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा स्मार्ट सिटी मिशन को लांच किया गया था और 2022 तक इसके परिणाम का दिखना प्रस्तावित किया गया है। यह अलग बात है की महामारी की वजह से स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट की गति कुछ धीमी पड़ गई है। आइ, टेक्निकल विन्डो के इस अंक में जानते हैं कि स्मार्ट सिटी और स्मार्ट सिटी मिशन क्या है।

विश्व के अनेक देशों में या कहें कि विकसित देशों में स्मार्ट सिटी पाई जाती है। भारतवर्ष में भी स्मार्ट सिटी अब कोई स्वप्न नहीं रह गई है। बहुत तेजी से हम भारत में लगभग सौ शहरों को स्मार्ट सिटी के रूप में तैयार करने की दिशा में बढ़ रहे है। यदि हम परिभाषा की बात करें तो स्मार्ट सिटी ऐसा आधुनिक शहर हैं जहां रहने वाले लोगों की सभी प्रकार की जरूरतें स्मार्ट तरीके से पूरी की जा सकती हो तथा लोगों के जीवन शैली की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाता हो, इसके साथ ही यहां पर सभी प्रकार की जन सुविधाएं उचित मूल्य पर आसानी से सुलभ कराई जा सके। इन शहरों में संतुलित पर्यावरण होता है और प्रदूषण की संभावनाएं न्यूनतम होती है। इन शहरों में बेहतर संचार सुविधाएं जिसे इंटरनेट सुविधा भी कहा जा सकता है उपलब्ध होती है। जीवन की बुनियादी जरूरतें बिजली, पानी, शौचालय, बाजार, यातायात आदि सुविधाएं आसानी से व्यवस्थित रूप से प्राप्त हो सकती है। अगर हम और सरल शब्दों में कहें तो स्मार्ट सिटी वह शहर है जिसमें पर्याप्त मात्रा में बिजलीए पानीए भोजन, आवाज, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा आधुनिक यातायात, सहित जीवन को आसानी से व्यतीत करने के साधन गुणवत्ता पूर्ण स्थिति में उपलब्ध हो सके।

स्मार्ट सिटी से होने वाले लाभ के अंतर्गत विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जा सकता है। स्मार्ट सिटी में प्रकार की आधुनिक सुविधाओं के साथ तकनीकी व व्यवहारिक ज्ञान को प्राप्त करना आसान होगा, जो कि हमारे विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने के लिए बहुत कारगर साबित होगा।

छोटे-छोटे गांवों में विकास धीमी गति से होता है, ऐसे में स्मार्ट सिटी का आना इन गांवों के विकास में मददगार साबित होगा। छोटे शहरों के विद्यार्थी को उचित अवसर व प्लेटफार्म नहीं मिलने के कारण वह अपने कौशल का प्रदर्शन नहीं कर पाते, उन्हें भी आसानी से स्मार्ट सिटी के माध्यम से आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। स्मार्ट सिटी में बाहरी कंपनियों / बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने की संभावनाएं बढ़ेंगी जिससे रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे और लोगों को गरीबी की रेखा से ऊपर आने में मदद मिलेगी।

यहां पर यह स्पष्ट है कि यदि स्मार्ट सिटी जिस सोच के साथ में बनाई जा रही है अगर उस दिशा में प्रभावी कार्य हुआ तो एक दिन भारत स्मार्ट कंट्री में जरूर गिना जाएगा। प्रधानमंत्री जी के द्वारा स्मार्ट सिटी को कुछ इस तरह परिभाषित किया गया है।

ऐसा शहर जो नागरिक की जरूरत से दो कदम आगे हो

स्मार्ट सिटी के लिए कुछ मापदंड तैयार किए गए हैं जिसके अन्तर्गत जिस शहर में यह सभी गुण होंगे उसी को स्मार्ट सिटी में शामिल किया जाएगा, या यह कहें कि यह सभी गुण होने पर एक शहर को स्मार्ट सिटी कहां जाएगा।

- पानी की पर्याप्त आपूर्ति
- बिजली की निश्चित व बेहतर आपूर्ति
- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सहित स्वच्छता
- बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा
- बेहतर सार्वजनिक परिवहन सुविधा
- गरीबों के लिए किफायती आवास
- बेहतर सूचना तंत्र व डिजिटलीकरण
- बेहतर ई.गवर्नेंस
- नागरिक भागीदारी सहित सुशासन
- उच्च स्तरीय पर्यावरण
- नागरिकों की सुरक्षा
- महिलाएं बच्चे और बुजुर्गों की विशेष सुरक्षा
- शहर में अच्छी परियोजनाएं लागू करना
- विश्व के अन्य शहरों से जुड़ाव

स्मार्ट सिटी मिशन की वेबसाइट के अनुसार इस योजना के तहत कुल 5929 प्रोजेक्ट के लिए 178,492 करोड़ रुपए का कार्य टेंडर दिया गया है। वही 146,466 करोड़ रुपए के 5245 प्रोजेक्ट के लिए कार्य का आदेश किया गया है, जबकि 45,264 करोड रुपए के 2673 प्रोजेक्ट का काम पूरा हो गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा 2017 से 2022 के बीच शहरों को वित्तीय सहायता देने की बात कही गई है, और उम्मीद है कि उक्त मिशन का परिणाम 2022 तक आना शुरू हो जाएगा।

स्मार्ट शहरों का चुनाव करने के लिए कुछ विशेष मापदंडों के साथ दो चरण की प्रक्रिया अपनाई जाती है।

पहला चरण– इस चयण में राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में संभावित स्मार्ट शहरों को स्कोरिंग के आधार पर चुना जाता है। जिसमें यह देखा जाता है कि कौन से शहर में कितनी सुविधाएं हैं और वहां की जनसंख्या कितनी है। इस चरण के तहत विभिन्न शहरों के बीच प्रतियोगिता होती है और जिन शहरों का चुनाव होता है उन्हें दूसरे चरण के लिए भेजा जाता है।

दूसरा चरण– इस चरण में शहरी विकास मंत्रालय शहरों का चयन करता है, तत्पश्चात 100 स्मार्ट शहरों के बीच राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता होती है। यहां प्रत्येक शहर अपना एक स्मार्ट सिटी प्रस्ताव प्रस्तुत करता है जिसमे वह अपना विकास मॉडल बताता है तथा वर्तमान में मौजूद समस्याओं को किस प्रकार खत्म किया जाएगा यह भी बताया जाता है। उक्त प्रस्ताव का एक समिति मूल्यांकन करती है जिसमें राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ और संस्थानों का एक पैनल होता है। इस चरण में जिस शहर का चयन होता है, उसकी घोषणा शहरी विकास मंत्रालय करता है।

स्मार्ट सिटी बनने के लिए लगभग तय हो चुके शहर–

- बिहार – बिहार शरीफ, भागलपुर, मुजफ्फपुर
- केरल – कोच्ची, त्रिशूर, तिरुवनंतपुरम, कोजीकोड, कोलम, मन्नापुरम।
- हिमाचल प्रदेश– धर्मशाला
- कर्नाटक– शचिवामोगा, मंगलुरु, बेलगावी,
- हुबली–धारवाड़, टुमकुर, दावनगेरे
- जम्मू–कश्मीर– जम्मू, श्रीनगर
- उत्तर प्रदेश– लखनऊ, इलाहाबाद, मुरादाबाद, सहारनपुर, गाजियाबाद, वाराणसी, मेरठ, अलीगढ़, बरेली, आगरा, रामपुर, झांसी, कानपुर
- मध्य प्रदेश– भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, सतना, बरहानपुर, सागर
- पश्चिम बंगाल– साल्ट लेक, न्यू टाउन, हलदिया और दुर्गापुर
- गुजरात– गांधीनगर, अहमदाबाद, सूरत, वडेडरा, राजकोट, भावनगर, जूनागढ़
- राजस्थान– जयपुर, अजमेर, उदयपुर, कोटा
- आंध्र प्रदेश– विजयवाडा
- ओडिशा– भुवनेश्वर
- छत्तीसगढ़ – रायपुर
- हरियाणा– गुड़गांव
- पंजाब– जालंधर, लुधियाना, अमृतसर, पटियाला, मोहाली और भटिंडा।
- महाराष्ट्र–नवी मुंबई, मुंबई, पुणे–पिंपरी चिंचवाड़, अमरावती, सोलापुर, नागपुर, कल्याण–डोम्बीवली, औरंगाबाद, नासिक, ठाणे
- तमिलनाडु– मदुरै, चेन्नई, सेलम, कोयंबटूर,त्रिचुरापल्ली तिरुनेलवेली, पोंडीचेरी, ट्यूटीकोरिन, कड्डालोर, तांजावुर, ईरोड, दिंदीगुल
- नॉर्थ–ईस्ट–अगरतला, शिलॉन्ग, आइज़ोल, इंफाल, कोहिमा, ईटानगर, गैंगटोक

मैं आपको यहां पर यह बता देना चाहता हूं कि देश की पहली स्मार्ट सिटी का श्रेय गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंशल टेक नामक शहर को जाता है। वर्ष 2011 में अहमदाबाद के नजदीक के इस सिटी का कार्य शुरू कर दिया गया था यह शहर भारत में अन्य स्मार्ट सिटी के लिए एक उदाहरण का कार्य करेगी।

स्मार्ट सिटी का कंसेप्ट हमें डिजिटल दुनिया के और भी करीब ले जाने वाला है और विज्ञान की इस तेजी से हम सभी का मानसिक, आर्थिक और जीवन शैली का विकास होगा। भारत वर्तमान में पश्चिमी देशों से मात्र डिजिटलाइजेशन का ही फर्क रखता है। यहां हमारे विकास की दर कम है। अगर हम यह दूरी तय कर लेते हैं तो हम आसानी से विकसित देशों की गिनती में आ खड़े होंगे।

साहित्य-साधना को समग्र समर्पित- वाचस्पति व विद्यावारिधि पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित

राजसमन्द अपने पुष्टि-मार्ग और विभिन्न कलाओं के साथ साहित्य और राष्ट्रीयता को लेकर जिस तरह से सर्वत्र आदृत है। वह आनंद का हेतु है। नाथद्वारा-कांकरोली के ऐसे कई पुरोधा हुए हैं जिनके नाम का स्मरण पूरे देश के साथ विदेश में भी बहुत स्नेह और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उसी ख्यात परंपरा में पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित (शास्त्री जी) का नाम आदर के साथ लिया जाता है।

मेवाड़ शासकों द्वारा प्रतिष्ठित पालीवाल समाज के पं. राधाकृष्ण पुरोहित के घर पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित का जन्म कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, वि.सं. 1965 दिनांक 8 नवंबर 1908 में हुआ। बाल्यावस्था में ही आपके पिताश्री महामारी में लोकसेवा करते हुए दिवंगत हो गए। जिससे आपका लालन-पालन आपकी माता श्री भूरी देवी जी द्वारा अनेक संघर्षों को भोगते हुए किया गया। आपकी शिक्षा नाथद्वारा में तत्कालीन उद्भट विद्वान पंडित मार्कण्डेय मिश्र जी के सानिध्य में सम्पन्न हुई। किशोरावस्था में ही पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा से अपने गुरुजनों को परिचित करा दिया। परिणामस्वरूप आपको कांकरोली द्वारकाधीश प्रभु श्री मंदिर के 'विद्या-विभाग' में गोस्वामी आचार्यों द्वारा उपसंचालक पद पर नियुक्त कर दिया गया। शास्त्री जी ने 'विद्या-विभाग' की प्रवृत्तियों में सहयोग करने के साथ ही गोस्वामी बालकों को अध्यापन कराते रहे। वर्तमान तृतीय पीठाधीश्वर महाराज श्री ब्रजभूषण लाल जी महाराज श्री स्वयं कहते रहते हैं कि पण्डित लक्ष्मीनानारायण जी ने मुझे अक्षर-ज्ञान कराया।

पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित स्वाध्याय की रूचि और प्रवृत्ति के चलते शुक्ल यजुर्वेद का सांगोपांग अध्ययन किया। 'वाराणसेय संस्कृत महाविद्यालय संप्रति' सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय से 'साहित्याचार्य' की उपाधि प्राप्त की। भारत चंपू काव्यस्य साहित्य-समीक्षा शोध-ग्रंथ पर सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय से 'वाचस्पति' (डॉकटरेट) की एवं अलंकार-समीक्षा संस्कृत-ग्रंथ पर आपको केन्द्रीय लाल बहादुर विश्वविद्यालय दिल्ली से विद्यावारिधि (डी. लिट.) की उपाधि प्राप्त हुई। स्वाध्याय प्रियता एवं साहित्य उपासन के कारण पुष्टि-पीठों, मेवाड़ रियासत और ठिकानों के साथ सरकारी संस्थानों, साहित्य अकादमी और विश्वविद्यालयों में आपकी बहुत प्रतिष्ठा रही। अपने जीवन काल में आप अनेक अलंकरणों, स्वर्ण-पदकों और उपाधियों से सम्मानित किए गए। विद्याविभाग में कुछ सत्रों तक की सेवा के उपरांत आप राजकीय सेवा में नियुक्त कर दिये गए। विद्यालयी प्रधानाध्यापक से आप संस्कृत-महाविद्यालय में संस्कृत.विभागाध्यक्ष के रूप में प्रतिष्ठित हुए और देश भर में संस्कृत विद्वान और साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की। शास्त्री जी का व्याकरण, न्याय, दर्शन एवं साहित्य पर समान रूप से असाधारण अधिकार था।

पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित (शास्त्री जी) सच्चे साहित्य-सेवी, साहित्योपासक और साहित्यकार, संपादक और नामचीन समालोचक रहे हैं। 'प्राचीन वार्ता रहस्य' के संस्कृत भाग का एवं पालीवाल संदेश, भैरों बाजार, आगरा जैसी पत्रिकाओं का और साहित्य अकादमी उदयपुर से राजस्थान के साहित्यकार साहित्य-ग्रंथ का सम्पादन किया। आप हिन्दी और संस्कृत में समान अधिकार से रचना करते रहे। विभिन्न विधाओं के साथ पालीवाल संदेश, कल्याण, संस्कृत रत्नाकर, भारती, सिद्धान्त जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं में आदर के साथ प्रकाशित होते रहे। कविता-कलाप पाण्डुलिपि में चैत्र शुक्ल अष्टमी संण् 1989 में 'सुप्रभात' शीर्षक से लिखी कविता का एक अंश प्रस्तुत है, जिससे शास्त्री जी की महनीय काव्य-प्रतिभा का परिचय मिलता है।

आओ मेरे सुप्रभात! तुम मंगलमय हो।
नवजीवन की ज्योति सदा देते मुदमय हो॥
अखिलविश्व को तुम सदैव कर्मण्य बनाते।
भव्य-भाव भरते, भावी की स्फूर्ति कराते॥

इसी 'सुप्रभात' रचना के अंतिम अंश को देखिए-

मिलता प्रिय चकई से, सरसिज विकसित होते।

आगम से तव सुप्रभात ! नित मंगल होते ॥
धन्य अत: तुम मान्य हमारे नित ही आओ ।
सकल मनुज मनमोद ललित कल्याण बढ़ाओ ॥

'सुप्रभात' रचना के बाद ही उक्त पाण्डुलिपि कविता-कलाप में संस्कृत में 'मन्दाकिनी' शीर्षक से लिखित छंद मिलता है, उसका उल्लेख उनकी काव्य प्रतिभा का परिचय देने को पर्याप्त होगा।

मन्दाकिन्यां जलं स्वादु तोष्येदास्यगं बुधां।
या सदा धूर्जटा: केश कलापे केलि कौतुका ॥

प्रस्तुत छंद 'अनुष्टुप' छंद है। विभिन्न छंदों की सृष्टि के साथ पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित का हिंदी काव्य उत्साह, राष्ट्रप्रेम, प्रकृतिप्रियता, समसामयिकता, ईश्वर अनुरक्ति के साथ विविध भाव-बोध को लिए हुए समर्थ काव्य सृजन है। कवि के अभिव्यंजना-कौशल को हम 'भर्त्सन' रचना के कुछ अंश को उद्धृत कर आपको परिचित कराते हैं।

याद रहे मूढ़ों ! अति का अंत यही है।
हवा चली घन घटाटोप का पता नहीं ॥
रह जाओगे फुदक-फुदक कर जहां-तहां ही।
शांतिहीन का उठता मस्तक कभी कहीं ही ॥

इसी तरह 'शरदागम' कविता में प्रकृति के वैभव का दर्शन कराने के मिस, सामाजिक शुभत्व को सरस तौर-तरीके से स्थापित करते देखे जा सकते हैं।

स्तु कमल अब सौरभ अपनी फैलाएंगे भुवनों में।
परोत्कर्ष सहना न कभी, यह नहीं रहा है पवनों में ॥
वहीं बनेंगे वाहक उसके सुषमा है अब पुलिनों में।
अरु गणना नहीं होती है अब जलाशयों की मलिनों में ॥

परोत्कर्ष सहना न कभी उक्ति में तत्कालीन सामंतवादी व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया का स्वर भी अभिव्यक्त होता है। पुरोहित जी हिन्दी और ब्रज भाषा के छंदों को उसी प्रकार आदर देते रहे जैसे, संस्कृत-छंदों को जीवनपर्यंत देते रहे। पौष शुक्ल, पूर्णिमा वि. सं. 1991 को श्री ब्रजभूषण लाल जी गोस्वामी जी के जन्मोत्सव पर कवि-सम्मेलन का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में आपने छंदों की मनोहारी काव्य.छटा प्रस्तुत की। बानगी के तौर पर निम्न कवित्त दर्शनीय है।

वाटिका वसंत बिनु पाठिका सुसंत बिनु
नाटिका सुकन्त बिनु दीन व्है सुदिन में।
नलिनी दिनेश बिनु फनिनी फनीश बिन
रजनी निशेश बिनु छीन होत छिन में।
हरिनी कुरंग बिनु करिनी मातंग बिनु,
अलिनी सु-भृंग बिनु मलीन होत मन में।
लासिनी मृदंग बिनु रागिनी सुरंग बिनु
कामिनी हि कन्त बिनु गिन त्यों मलिन में ॥

पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित प्राकृतिक सत्य को दिखाकर, सामाजिक सत्य की प्रतिष्ठा करने का कार्य करते रहे। उक्त टिप्पणी को आप 'कामिनी हि कन्त बिनु गिन त्यों मलिन में' देख सकते हैं।

तत्समय प्रकाशित होने वाली प्रभात पत्रिका के प्रताप अंक में पंडित पुरोहित जी की लम्बी कविता प्रताप जयंती शीर्षक से प्रकाशित हुई। इस कविता में भारत-वर्ष के राष्ट्रीय चरित्र श्री महाराणा प्रताप का वर्णन वंदनीय बन पड़ा है। प्रताप जयंती कविता ओज-पूर्ण भाषाई-संगठन से युक्त उद्धरण भी दृष्टव्य है।

'भूखों अनेकों दिन रहा पर सत्य पथ छोड़ा नहीं।
दासत्व अस्वीकार था मुख धर्म से मोड़ा नहीं।
प्रणवीर अतिशय धीर हो सब दुखदल सहता रहा।
प्रिय मातृभूमि स्वधर्म हित दुर्दैव से लड़ता रहा' ॥

हम इस आलेख के माध्यम से आपको यह बताना चाह रहे हैं कि पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित जी का कृतित्व संस्कृत के साथ हिन्दी में भी शोभायमान रहा है। देववाणी संस्कृत में रचित पंडित जी का संस्कृत.साहित्य विपुल मात्रा में और समृद्धतम रहा है। आपका गद्य एवं पद्य की विविध विधाओं में समान रूप से अधिकार था। आपकी समालोचनात्मक कृति शब्द विशेषगत काव्यतावाद प्रतिष्ठा का राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के द्वारा प्रकाशित हुई। भारत चम्पू काव्यस्य समीक्षा एवं अलंकार समीक्षा जैसी महत्त्वपूर्ण समीक्षा कृतियों का प्रकाशन देशा के बड़े प्रकाशनों से इनके ज्येष्ठ पुत्र डॉ. चन्द्रशेखर पुरोहित के संपादन में हो चुका है। इसके अतिरिक्त 'भाव वैभवं, मुक्तमणिमाला, गद्यतरङ्गिणी, पञ्चामृत काव्यं, निबन्ध निर्झरणी, चण्डी-चरण-रेणुचिन्तनं, चित्तौड़दुर्ग: और श्री गोविन्दगुणार्णव:' कृतियाँ अति उल्लेखनीय हैं-

'श्री गोविन्दगुणार्णव'पंडित श्री लक्ष्मीनारायण पुरोहित जी की यशस्वी साहित्यिक कृति है। इसके सम्पादन व प्रकाशन का कार्य इनके तृतीय पुत्र त्रिलोकी मोहन पुरोहित कर रहे है। उक्त कृति में लगभग सात सौ से अधिक छंद भगवान गोविंद की प्रशस्ति में लिखे गए हैं। आशा है कृति का संपादन व प्रकाशन का कार्य शीघ्र ही सम्पन्न जाएगा। 'श्री गोविन्दगुणार्णव' के प्रकाशन पर काव्य साधक पंडित लक्ष्मीनारायण पुरोहित पर गर्व और श्रद्धा की मात्रा में वृद्धि ही होगी। उद्धरण स्वरूप यह छंद दर्शन पर्याप्त रहेगा-

'माधव ! ते स्मितरश्मयो लोके यदि विलसन्ति।
तन्मन्ये संप्रति सतां सुकृतसंपदरू सन्ति' ॥

हमारे लिए यह संतोष की बात है कि पुरोहित जी का परिवार साहित्यिक परिवार है। उनके चार पुत्र हैं। डॉ चन्द्रशेखर पुरोहित संस्कृत साहित्यकार रहे हैं। प्रो. महेशचन्द्र पुरोहित और त्रिलोकी मोहन पुरोहित हिन्दी साहित्यकार व समालोचक के रूप में सुप्रतिष्ठित हैं। चतुर्थ पुत्र श्री रमाकांत पुरोहित आत्म-साधक हैं। यह सौभाग्य की बात है कि लक्ष्मीनारायण पुरोहित के पुत्र और पौत्र प्रतिभाशाली हैं। साहित्य की गहरी समझ भी रखते हैं। अत: विभिन्न विधाओं में रचित उपलब्ध कृतियां साहित्य-संसार को यथासमय शीघ्र ही प्राप्त होगी।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
जलचक्की, सलूस रोड
कांकरोली, राजसमंद

सब तरफ नशा

भेरु जी से
शिव मंदिर तक
इस बड़ से
उस बड़ तक
पान के गल्लों पर
चाय की दुकानों पर
मिल जाऐगी भीड़
लाल लाल पीक से
सड़कें चौराहें की
रंगी हुई काया।
कौने कौने
बने हुए हैं पीकदान
जगह जगह मिल जाएंगी
चाय की गिलासें
कोई खड़ी
कोई ओंदी
तो कोई लेटी हुई।
धूप में जगह जगह
बैठे मिलेंगे
निठल्ले, बिना काम के
चाय की चुस्की के साथ
रस लेते बतरस के साथ
मुंह में बीड़ी सिगरेट लिए।
बीड़ी सिगरेट के धूम्र के
नभ में उड़ाते मेघों की
धुंधली काया के साथ
लाल पीली भूरी
खिलखिलाती ठहाके लगाते
बत्तीसी के साथ।
और टेबल पंखे की तरह
अपनी नजरों को
घूमाते
इस छोर से उस छोर तक
दानवों से चेहरे के साथ
मां बहनों के
अंग अंग को निहारते
भूखे खूंखार भेड़िये की
तीखी पेनी भेदती
वासना की नजरों के साथ।
सुबह से शाम तक
मजदूरी करने वाले
भीख मांगने वाले
कुछ ढोंगी साधु
शाम होते ही
रात होते ही
नजर आते हैं लहराते
सड़क पर लेटे हुए
नाली में सोए हुए
नशे में धुत।
लेकिन
नजर नहीं आता हैं
कुछ गिनी चुनी
दुकानों के अलावा
एक भी ग्राहक
खरीदते रोजमर्रा का
घरेलु सामान।
बस दिखाई देते
चारों प्रहर
चाय पीने वाले
बीड़ी सिगरेट पीने वाले
हर तरह का नशा करने वाले
मधुशाला पर जीने वाले
मधुशाला पर जीने वाले।

मनीष नंदवाना 'चित्रकार'
राजसमन्द

हम तुमको शीश नवाते हैं

देश के रखवाले हो तुम, हम तुमको शीश नवाते हैं।
सुना कर शौर्य की गाथा, जोश हम सब में जगाते हैं।
भारत मां के वीर सपूतों कोटि- कोटि नमन तुमको,
तुम बैठे हो सरहद पर, यहां हम मिल जश्न मनाते हैं।

लिखी है गौरव गाथा खून से, उसे जग को सुनाते हैं।
तिरंगा नील गगन लहराता, देख हम नित हर्षाते हैं।
ना जाए व्यर्थ कुर्बानी, बस यही तुम याद रख लेना।
पीढ़ियां दोहराएगी तुमको, पाठ हम यही सिखाते हैं।

भगाकर गद्दारों को वो, उनकी औकात दिखाते हैं।
जिनका जीवन राष्ट्र समर्पित, उनको भुल न पाते हैं।
खड़े सरहद पर जो सीना तान, वो मां के लाल थे।
खोकर लाल वो अपने, अपना राष्ट्र धर्म निभाते हैं।

पहन कर खाकी वर्दी, वो तो अपना फर्ज निभाते हैं।
देते प्राण सदा वो हंसकर, कदम पीछे ना हटाते हैं।
धन्य वो मां हो गई आज, जिसने इन वीरों को जाया।
तिरंगा फहरा कर सरहद पर, कफन तिरंगा पाते हैं।

वीणा वैष्णव रागिनी
कवयित्री, राजसमंद

पीड़ित निवेशक संगठित हो, लोक अधिकार मंच दायर करेगा सुप्रीम कोर्ट में लोकहित याचिका : डॉ बाबेल

लोक अधिकार मंच द्वारा कांकरोली स्थित गोपाल कृष्ण वाटिका में राजसमंद जिले के नागरिकों के आदर्श को ऑपरेटिव, सहारा इंडिया, संजीवनी, भविष्य, इत्यादी सहकारी संस्थाओं में फंसी आमजन की अरबों रुपए की जमा पूंजी के विषय में जन सुनवाई की मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ बसंती लाल बाबेल की अध्यक्षता, प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट संपत लाल लड्ढा के मुख्य आतिथ्य, संभाग अध्यक्ष फतह लाल गुर्जर अनोखा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ वीरेन्द महात्मा, नेशनल फेडरेशन ऑफ आदर्श वेलफेयर सोसाइटीज के संयोजक एडवोकेट भरत कुमावत के विशिष्ठ आतिथ्य में हुई जिसमें निवेशकों के सुनवाई की गई तथा वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थितियों पर व्यापक चिंतन, मनन करके आम जन को शीघतिशीघ्र उनका पैसा वापस दिलवाने पर रणनीति बनाई गई।

जनसुनवाई के संचालक मंच के कपिल पालीवाल व कन्हैयालाल त्रिपाठी ने प्रेस को बताया कि जनसुनवाई के आरंभ में विषय प्रवर्तन करते हुए नेशनल फेडरेशन ऑफ आदर्श वेलफेयर सोसायटी राष्ट्रीय संयोजक एडवोकेट भरत कुमावत ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि वर्तमान समय में निवेशकों की पूंजी का मुद्दा राज्यसभा, लोकसभा तथा कई राज्यों की विधानसभाओं में प्रमुखता से उठ चुका है, सभी राष्ट्रीय राजनीतिक दलों को ज्ञापन के माध्यम से विषय से अवगत करा दिया गया है, साथ ही छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट राजस्थान हाई कोर्ट तथा गुजरात हाई कोर्ट द्वारा भी निवेशकों की जमा पूंजी लौटाने का आदेश जारी किया जा चुका है फिर भी यह सरकारी तंत्र अंधा और बहरा हो गया है वहीं दूसरी ओर लिक्विडेटर एच एस पटेल द्वारा भी निवेशकों को जबरन अवैध रूप से अहमदाबाद में पुलिस द्वारा विरुद्ध करवाया जाना भारत में कानून के शासन का मखौल उड़ाता है। ऐसे समय में यह एक यक्ष प्रश्न देश की जनता के सामने खड़ा हुआ है कि निवेशक को का सच्चा हितैषी आज देश में कौन बचा रह गया है। इसलिए फेडरेशन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कोो ज्ञापन भेजकर संसद में आदर्श घोटाले पर श्वेत पत्र प्रस्तुत करने तथा निवेशकों को उनकी पूंर्व पूजी लौटाई जाने का समय बदला ब्लूप्रिंट देश की जनताा को देने की मांग की गई है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व न्यायाधीश व शासन सचिव डॉ बाबेल ने स्वीकार किया कि वर्तमान राष्ट्रीय लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है कि बड़े पैमाने पर आम जनता के खून पसीने की जमा पूंजी में निवेशकों के साथ बहुत बड़ा छल हुआ है, यह पूरे देश नागरिकों की बहुत बड़ी समस्या है जिसे सामूहिक प्रयासों द्वारा ही निपटाया जा सकता है। पूर्व न्यायाधीश बाबेल ने जन समस्याएं सुनने के बाद समस्या के निराकरण के क्रम में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि पीड़ित निवेशकों को भी अपना संगठन बना कर सरकार पर दबाव बनाना चाहिए तथा लोकायुक्त को भी शिकायत करनी चाहिए। डॉक्टर बाबेल ने लोक अधिकार मंच की तरफ से सुप्रीम कोर्ट में लोकहित वाद दायर करने की घोषणा की तथा फ्तेह लाल गुर्जर अनोखा को निवेशिकों को संगठित करने हेतु संभागीय प्रभारी नियुक्त किया तथा उन्हें निवेशकों को संगठित करके लोकहित वाद दायर करने तथा लोकायुक्त को शिकायत दर्ज करवाने का आदेश भी दिया।

मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट संपत लाल लड्ढा ने स्वतंत्र की किंकर्तव्य विमूढ़ता पर रोष व्यक्त करते हुए कहा कि पहले तो केंद्र एवं राज्य सरकारें इन लोगों को लाइसेंस देकर जनता से पैसा इकट्ठा करने को अधिकृत करती है और सरकार द्वारा जारी परमिशन ऊपर विश्वास व्यक्त करके ही आम नागरिक इन समितियों में पैसा जमा कराते हैं तो फिर सरकार कैसे निवेशकों की पूंजी वापस दिलाने मैं हाथ खड़े कर देती है और निवेशकों को आत्महत्या करने तथा दरिद्र पूर्ण सम्मान विहीन जीवन जीने को अकेला छोड़ देती है यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। लड्ढा ने पुरजोर शब्दों में कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार है भी इस घोटाले में आंशिक रूप से जिम्मेदार है इसलिए तुरंत प्रभाव से केंद्र एवं राज्य सरकारों को निवेशकों की पूंजी में आंशिक भुगतान करना चाहिए लोक अधिकार मंच जनजागृति अभियान चलाकर सरकारों को निवेशकों की जमा पूंजी लौट आने को बड़ा आंदोलन करेगा।

संभागीय अध्यक्ष अनोखा ने निवेशकों को विश्वास दिलाया कि लोक अधिकार मंच आम जनता के पैसे मिल जाने तक कंधे से कंधा मिलाकर अपने नेतृत्व में जन आंदोलन एवं जन संवाद करेगा। जिला अध्यक्ष कन्हैयालाल त्रिपाठी ने यह मांग की कि अरबों खरबों रुपए डूब जाने के बावजूद भी निरंतर सहकारी समितियां अभी भी आम जनता से पैसे वसूल कर रही है जिस पर सरकार को तुरंत संज्ञान लेकर उचित कार्रवाई करनी चाहिए जिससे कि भविष्य में और ज्यादा पैसा जनता का ना उलझे।

जनसुनवाई में नरेंद्र सिंह कच्छावा, राकेश कोठारी, जगदीश चंद्र स्वर्णकार, गणेश कुमावत, बंशीलाल रांका, एडवोकेट भावना पालीवाल, धर्मेंद्र बंधु, रविनंदन सिंह चारण, गोवर्धन धाभाई, सुखदेव सिंह आशिया, तेजराम कुमावत, मनोज छापरवाल, एडवोकेट रमेश जोशी नाथद्वारा, महेश जोशी, शीला पोखरना, मीना पंवार, रजनी पालीवाल, महेश वर्मा, भगवत शर्मा, तरुण कुमार शर्मा सहित बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया।

जगरानी

मेरी कविता आजाद के मां की करुण कहानी है
ऋषि- मुनियों सी तपी देशभक्त की मां जगरानी है

अंग्रेजों के छाती पर स्वराज्य की पिस्तौल तानी है
मां जगरानी, आजाद के बहादुर नामे की दीवानी है

मोह से ज्यादा मां भारती की गुलामी उसे खलती है
आजादी के अग्निकुंड में आहुति देकर ही निकलती है

सहस्त्र दु:ख व अंग्रेजों के आघातों को मां झेल रही है
भीलों की बस्ती में तो कभी भेष बदलकर रह रही है

गोबर के उपलों को थेप जगरानी गुजारा कर रही है
मिले मां भारती को आजादी सपना मन में संजो रही हैं

चन्द्र शेखर के बलिदान का समाचार जब उसे मिला तो
मानों दुखियारी मां पर जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है

इतिहास गवाह स्वराज के पहले भी स्वराज के बाद भी
स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को संघर्ष करना पड़ा है

गोरों के शासन में अक्सर वो मन मसोस कर रह जाती है
आजादी के बाद मिलेगा भर पेट कुछ आश लगाए रहती है

मिली आजादी जब तो आकर पड़ोसियों ने बताया है
उस दिन मीठे भात बनाकर उसने सबको खिलाया है

मीठे भात का कर्ज़ महीनों तक मां ने मेहनत कर चुकाया है
चन्द्र शेखर आजाद के सपनों को आज पूरा होना पाया है

पेट की भुख मिटाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रही है
खुद के जर्जर हालात से अब भी जगरानी संघर्ष कर रही है

मां के उपलों की आग पर अन्न के दाने नहीं होते हैं
आजाद भारत के शासकों की आंख में कोई मायने नहीं है

नये भारत का मंत्री संत्री या जिलाधीश मिलने नहीं आया है
दो समय की रोटी से हो गुजारा उतनी पेंशन नहीं दे पाया है

आज़ाद के बलिदान का हमने यही अवदान मां को दिया है
पर भगवान ने भी सुख का कुछ जोड़ गुणा भाग किया है

सदाशिवराव मलकापुरकर, शंकरराव और चन्द्र सब भाई है
जगरानी बड़ी खुश किस्मत उनके बेटों की कालापानी से हुई रिहाई है

लौट आए जब वतन उन्होंने आजाद की मां को संभाला है
अपनी मां सी सेवा करके दोनों ने उसे निहाल कर डाला है

मां भारती भी आजाद की मां के नशीब पर आज इतराई होगी
धन्य हो जगरानी तुमने आजाद की मां होने का गौरव पाया है

चन्द्रशेखर आजाद
एन 22 गोविन्दनगर, राजसमंद
मो. 9461670670

जयवर्द्धन के व्यंग्यकार विनोद विक्की द्वारा दो अन्तर्राष्ट्रीय संकलन का सम्पादन

जयवर्द्धन के व्यंग्यकार विनोद विक्की ने दिसंबर माह में लंदन, कनाडा, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, यूपी, बंगाल, आदि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रचनाकारों की उम्दा रचनाओं के संकलन वाली दो पुस्तक खरी -खरी एवं ओस की बूंद का संपादन कर एक और साहित्यिक उपलब्धि हासिल की है। जिसमें खरी -खरी एक व्यंग्य संग्रह है तो ओस की बूंद लघुकथा संग्रह। दीक्षा प्रकाशन द्वारा उक्त दोनो संग्रह हेतु श्रेष्ठ रचनाओं के चयन एवं संपादन की जिम्मेदारी व्यंग्य साहित्यकार विनोद कुमार विक्की को सौंपा गया था।

उल्लेखनीय है कि बिहार के युवा व्यंग्यकार विनोद विक्की जयवर्द्धन पत्रिका के व्यंग्य स्तम्भ में अपनी तंज युक्त शशक्त धारदार लेखनी से नियमित व्यंग्य लिख रहे हैं। साथ ही इनकी व्यंग्य रचनाएं दर्जनों पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित हो रही है। खगड़िया, बिहार के महेशखूंट बाजार निवासी स्व.ओमप्रकाश गुप्ता के पुत्र व्यंग्यकार विनोद विक्की इससे पूर्व अट्टहास, समय सुरभि अनंत, रवीना, स्वैच्छिक दुनिया, सत्य की मशाल आदि आधा दर्जन से अधिक पत्रिकाओं के व्यंग्य विशेषांक का अतिथि संपादन कर सर्खियां बटोर चुके है। विनोद साहित्य सृजन हेतु बिहार के अलावा मुंबई, भोपाल, दिल्ली, छत्तीसगढ़, हरियाणा, चंडीगढ़ आदि राज्यों में सम्मानित हो चुके हैं। विनोद ने दीक्षा प्रकाशन तथा सहभागी रचनाकारों का धन्यवाद करते हुए जयवर्द्धन पत्रिका सहित उन तमाम पत्रिकाओं के संपादक के प्रति आभार प्रकट किया है जिनकी पत्रिकाओं में नियमित उनकी रचनाएं प्रकाशित हो रही है।

पुरुषोत्तम शाकद्वीपी अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद के जिला अध्यक्ष नियुक्त

हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करवाने एवं हिंदी के प्रचार प्रसार के कार्य को गति देने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद के राष्ट्रीय चेयरमैन एवं संस्थापक श्री हृदय नारायण मिश्रा द्वारा उदयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार एवं कवि साहित्य रत्न पुरुषोत्तम शाकद्वीपी को उदयपुर जिले का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

व्यंग्य

दिन, महीने, साल बदलते जाएंगे...

साल बदलें या मौसम हमें रत्तीभर फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि साल, समय और संबंधी होते ही हैं बदलने के लिए और हम ठहरे विशुद्ध भारतीय तो आप ही बताइए प्रतिवर्ष बदलने वाले ठाकुर प्रसाद कैलेंडर की तरह हम कैसे बदल जाए।

नववर्ष के अहले सुबह हम अपनी क्षमता एवं औकात के अनुसार मन, कर्म और वचन से प्रण करते हैं, शपथ लेते हैं कि जुआ नशा, झूठ, मक्कारी आदि सभी बुराइयों को आज से तज देंगे। नववर्ष के प्रथम दिन शपथ टॉपअप वाली यह वैलिडिटी भले ही जनवरी के प्रथम सप्ताह में क्यों ना समाप्त हो जाए लेकिन प्रतिवर्ष शपथ रिन्यूअल करना कतई नही छोड़ते हैं। वैसे भी हम ठहरे सौ प्रतिशत खालिस इंडियन! कसम खाना और अगले दिन तक उस कसम को पचा जाना हमारे लिए कोई नई बात नहीं!

कसम लेकर कसम तोड़ने में घोर आस्था रखने वाले हम वो भारतीय हैं, जो ट्रेन में सफर करते वक्त जनरल कोच में ऊपर वाली लगेज सीट पर पालथी जमाकर बैठते हैं और पुराने चप्पल तथा जूता को सुरक्षा के दृष्टिकोण से ट्रेन की छत से लटके पंखा के ऊपर रख देते हैं। अब यदि नए साल में बदलाव लाकर जूता-चप्पल फर्श पर रखें और खुदा ना खास्ता वो चोरी हो जाए तो क्या भारतीय रेल पद्भूषण चोरी का मुआवजा देगी। नहीं न! तो हम स्वयं में बदलाव लाकर सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से चप्पल को पंखा के ऊपर रखना कैसे छोड़ दें।

हम वो हैं जो दुर्घटनाओं में जान बचाने के लिए नहीं बल्कि चालान के डर से खोपड़ी के उपर डेढ़ किलो का भारी भरकम हेलमेट लगाते हैं। अब आप ही बताइए कम आमदनी में बिना हेलमेट जुर्माना का रिस्क कौन उठाए। रही बात जान की तो उ मामले में तो हम सिकंदर है, रिस्की सेल्फी लेना, हवा के साथ बाइक उड़ाना ये सब तो जिगरा वाली बात है, तो फिर हम नए साल में अपनी आदत क्यों बदलें।

हम वो हैं जो जीवन बीमा पॉलिसी तो लेते हैं, लेकिन पॉलिसी का उद्देश्य हमारे स्वर्गलोक गमन के पश्चात परिवार की आर्थिक सुरक्षा की बजाय टैक्स सेविंग का होता हैं। अब यदि नए साल के साथ हम बदल जाएं और ज्यादा टैक्स बचाने का जुगाड़ नहीं करें तो टैक्स केअतिरिक्त भार से देश की अर्थव्यवस्था तो पटरी पर आ जाएगी, लेकिन हमारी पारिवारिक अर्थव्यवस्था तो पगडंडी पर चली जाएगी न।

हम वो हैं जिसे इंसानी जान से ज्यादा धरम की फिक्र होती है भले ही जान या देश खतरा में हो फर्क नहीं पड़ता लेकिन धरम पर खतरा हम बर्दाश्त नही कर सकते भैया! जब भी हमारे आका बताते हैं कि धरम खतरे में हैं तो इंसानियत को खतरे में डालकर हम धरम को महफ़ूज कर लेते हैं। अब नए साल में यदि अपने आप को बदल दे तो इंसानियत तो महफ़ूज हो जाएगी लेकिन धरम खतरे में आ जाएगा।

हम वो हैं जिसके कारण स्वच्छता अभियान की शुरूआत हुई हैं। जिस स्थान पर या दीवार पर सख्त चेतावनी और पकड़े जाने पर जुर्माना, कार्रवाई का उल्लेख करते हुए बड़े बड़े अक्षरों में 'यहां, थूकना, पेशाब करना मना है' लिखा होता हैं वहां तो निश्चित रूप से थूकने और मूतने जाते हैं जी! कोई हमें चैलेंज कर दें और हम स्वीकार ना करें ऐसा हो ही नहीं सकता। अब नए साल में स्वच्छता का शपथ लेकर चुनौतियों को स्वीकार करना बंद कर दें तो फिर जीवन में रोमांच ही नहीं रह जाएगा।

उपरोक्त मौलिक चाल-चरित्र वाली प्रकृति हमारा विशेष गुण, टैलेंट, प्रतिभा है। अब आप ही बताइए इन बहुमुखी मानवीय प्रकृति को हम कैसे बदल दें और वो भी भला उस नए साल के लिए जो मुआ एक साल के बाद खुद ही बदल जाता है।

विनोद कुमार विक्की
महेशखूंट बाजार
खगड़िया बिहार 851213

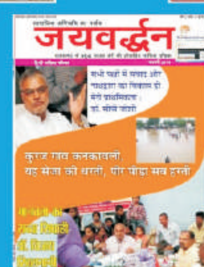

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम–श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए
3 वर्ष	36	720	220	500 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

कवि प्रमोद सनाढ्य छंद सम्राट से सम्मानित

26 दिसंबर 2021 को काव्य गोष्ठी मंच के द्वारा आयोजित गोपाल कृष्ण वाटिका के एक भव्य समारोह में जिसकी अध्यक्षता प्रमुख शिक्षाविद जयदेव जी गुर्जर गॉड व जितेंद्र कुमार जी ओझा मुख्य निष्पादन अधिकारी मंदिर बोर्ड नाथद्वारा के मुख्य अतिथि में तथा साहित्यकार और कवि श्री कमर मेवाड़ी इतिहासकार व कवि फतेह लाल जी गुर्जर अनोखा व लोक कवि चतुर जी कोठारी के विशिष्ट अतिथि और कथावाचक श्री मदन मोहन जी व संत श्री धीरज राम जी के सानिध्य में संपन्न हुआ सर्वप्रथम मंचासीन अतिथियों ने सरस्वती माता को दीप प्रज्वलित कराया गया तत्पश्चात श्री जितेंद्र कुमार सनाढ्य ने सरस्वती वंदना का सुरीला पाठ किया। उसके बाद मंचासीन अतिथियों का काव्य गोष्ठी मंच के सदस्यों द्वारा उपर्णा व शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। आयोजन के स्वागत अध्यक्ष अफ़जल खा अफ़जल ने सभी मंचासीन अतिथियों व पधारें हुए महानुभाव का स्वागत करते कांकरोली में जन्मे श्री प्रमोद सनाढ्य को इस माटी का गौरव बताया और इस सम्मान का हकदार भी। इसके बाद श्रीनाथ के श्रृंगार दर्शन ग्रंथ पर युवा साहित्यकार श्री त्रिलोकी मोहन पुरोहित ने बहुत ही गहराई से इस ग्रंथ का अध्ययन कर इस ग्रंथ के कई छंदों पर विद्वता पूर्ण पद वाचन कर श्रोताओं को बांधे रखा। कांकरोली के वरिष्ठ व प्रसिद्ध शायर शेख अब्दुल हमीद ने अपने आध्यात्मिक कलाम से समा बांधा साहित्यकार नरेंद्र मेहता ने इस ग्रंथ पर अपने विचार प्रकट करते हुए अपने पत्र वाचन से ग्रंथ की खूबियों का वर्णन किया।

काव्य गोष्ठी मंच के अध्यक्ष श्री धीरेंद्र सनाढ्य शिल्पी व समारोह के कार्यक्रम अध्यक्ष श्री सूर्य प्रकाश दीक्षित ने मंचासीन अतिथियों के सानिध्य में श्री प्रमोद सनाढ्य को अभिनंदन पत्र वह छंद सम्राट का स्मृति चिन्ह भेंट किया। भाव विभोर प्रमोद सनाढ्य ने अपने उद्बोधन में इसे अपने गांव के बुजुर्ग अपने परिवार के संस्कार और लोगों के प्यार का उपहार बताकर आभार व्यक्त किया और भावुक कवि मन प्रमोद सनाढ्य ने अपने गुरुओं को नहीं भूलाया और उन्हें याद करते हुए मंच पर अपने गुरु श्री शांतिलाल हींगड़, श्री पाराशर उपाध्याय और अफ़जल खा अफ़जल का उपरणा, साल और नारियल भेंट कर स्वागत किया। अपने एक और गुरु श्री सुरेश जी कावड़िया को भी उन्होंने याद किया पर स्वास्थ्य कारणों से वह नहीं आ पाए तो श्री प्रमोद ने कहा मैं उनके घर जाकर उनका स्वागत करूंगा। मैं आज जो कुछ भी हूं गुरुओं के आशीर्वाद से ही हूं। श्री गौरव पालीवाल ने प्रमोद सनाढ्य के ग्रंथ से 11 छंदों का सस्वर पाठ कर श्रोताओं की वाहवाही लूटी। श्री अनोखा जी ने प्रमोद को बधाई देते हुए इस ग्रंथ को वैष्णव संप्रदाय के लिए एक अनमोल ग्रंथ बताया। श्री कमर मेवाड़ी ने इस ग्रंथ की रचना को एक उत्तम काव्य कृति बता श्री प्रमोद सनाढ्य के इस प्रयास को सराहा और बधाई दी लोक कवि चतुर कोठारी ने इस ग्रंथ की रचना में श्री प्रमोद सनाढ्य की धर्मपत्नी को भी बराबर का भागीदार बताया मुख्य अतिथि श्री जितेंद्र कुमार ओझा ने इस कृति के प्रकाशन के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए इस ग्रंथ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की समारोह अध्यक्ष श्री जयदेव जी गुर्जर गॉड ने प्रमोद सनाढ्य की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए प्रमोद सनाढ्य को एक भक्त कवि के रूप में पेश किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने सारे श्रोताओं को मंत्र मुक्त करते हुए भाव विभोर कर दिया। अंत में श्री सूर्य प्रकाश दीक्षित ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए प्रमोद सनाढ्य की इस कृति को काव्य गोष्ठी मंच को दिया एक अनुपम उपहार बताया।

समारोह में नाथद्वारा से कई साहित्यकार व साहित्य प्रेमी व उदयपुर से साहित्यकार ज्योतिपुंज पंड्या अपनी पूरी टीम के साथ उपस्थित रहे। नगर की सभी साहित्यिक संस्थाओं के सदस्य साहित्यकार पूरे समय तक कार्यक्रम में मौजूद रहे और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। नगर के कई गणमान्य नागरिक वह साहित्य प्रेमियों ने कार्यक्रम का आनंद लिया। कार्यक्रम का सफल संयोजन ख्याति प्राप्त राष्ट्रीय कवि श्री गिरीश विद्रोही ने किया। अंत में श्री राहुल दीक्षित ने सबको स्नेह भोज हेतु आमंत्रित किया।

प्रस्तोता :
मुकीम खान
जलचक्की, राजसमंद

एक संविधान, एक भगवान और एक विधान

वो जो भी है किसी भी नाम से पुकारो एक ही है और उसने दुनिया भी एक ही बनाई है। जो उसको मानते हैं या जो उसको नहीं मानते हैं ऊपर वाले ने सभी को समान बनाकर सब एक जैसा दिया है। जो समझते और समझाते हैं[उसकी पूजा अर्चना महिमा का गुणगान करने से जो भी पाप किये हैं क्षमा किये जा सकते हैं और मोक्ष मिल सकता है खुद गुमराह हैं।

ईश्वर की अदालत में हिसाब अच्छे बुरे कर्मों का होना चाहिए दुनिया की शासकों की व्यवस्था की तरह न्याय अन्याय में पक्षपात भला कैसे हो सकता है। भगवान ईश्वर अल्लाह वाहेगुरु सभी को याचक कैसे बना सकते हैं उनको अपनी बनाई दुनिया के सभी इंसानों से कुछ भी पाने की ज़रूरत कैसे हो सकती है जब विधाता सभी को सब देता है। अचरज की बात है ईश्वर को अपने होने की बात खुद कहने की चाहत भला क्यों हो सकती है उसका होना कोई छिपी हुई राज़ की बात नहीं है ज्ञान की आंखों से पता चलता है अज्ञानता की पट्टी बंधी हुई जिनकी आंखों पर उन्हीं को नज़र नहीं आता। आस्था विश्वास विवेक बुद्धि से पैदा होता है किसी के आदेश उपदेश से तोते की तरह रटने से कदापि नहीं। अगर हम अपने विवेक से चिंतन मनन कर समझेंगे तो सब समझ आएगा। धार्मिक कथाओं ग्रंथों में सही मार्गदर्शन देने का कार्य किया गया है लेकिन सोचने की बात ये है कि कोई भी आपको सही गलत रास्ता बताता है मगर उस पर चलना और आचरण कर उचित मंज़िल तक पहुंचना आपको अपने कदमों से है। उधर नहीं जाना सभी जगह लिखा हुआ होता है लेकिन किसी ने भी उस हिदायत को कभी माना ही नहीं। वास्तविकता यही है आपकी आत्मा आपका मन जानता है क्या उचित क्या अनुचित है फिर भी सभी स्वार्थ लोभ अहंकार के कारण मनमानी करते हैं और समझते हैं जैसे नियम कानून का उलंघन कर रिश्वत जुर्माना देकर बच जाएंगे। पकड़े जाने पर वैसा ऊपरवाले की अदालत में भी स्तुति अर्चना चढ़ावा काम आएगा। इससे बढ़कर अज्ञानता और नासमझी क्या हो सकती है।

क्या भगवान को किसी इंसान से कुछ चाहिए मतलब आप ईश्वर को देने वाले बन सकते हैं ये आपकी आस्था नहीं कुछ और है विधाता के दरबार में झूठ का कारोबार नहीं चलता है। ईश्वर की परिकल्पना करने वालों ने उसके अनेक नाम दिये और अपने अपने आराध्य की कथा लिख कर उनका गुणगान किया लेकिन उनकी कथाओं में महत्व उसी को बड़ा और महान शक्तिशाली आदर्श साबित करने की खातिर अन्य किरदारों की उपेक्षा और उनका महत्व कम करना ठीक उसी तरह है जैसे पिता को संतान सबसे बेहतर समझती है मानती है या हर माता को अपने बच्चे सबसे प्यारे लगते हैं।

विधाता ने जीव जंतु पेड़ पौधे हवा पानी धरती जाने क्या क्या बनाया और इंसान को भी बनाया लेकिन उसने सभी को बंधन मुक्त रखा अगर चाहता तो सभी सिर्फ वही कर्म करते जो उसकी मर्ज़ी या अनुमति होती लेकिन तब आदमी पेड़ पक्षी जीव सभी इक मशीन होते निर्जीव निर्धारित कार्य करने को। सभी ज्ञानीजन कहते हैं इंसान कर्म अपनी मर्ज़ी से कर सकता है नतीजा ऊपरवाले की मर्ज़ी से और अच्छे बुरे कर्मों का फल भी मिलना अवश्य है देर है अंधेर नहीं है। मूर्खता है हम इंसान सीसीटीवी कैमरे से निगरानी करते हैं और समझते हैं ऊपर वाला नहीं देखता हम क्या करते हैं, क्या क्या नहीं करते हैं। अपने भगवान को भी धोखा देना चाहते हैं इस से बढ़कर नादानी नासमझी क्या होगी। आदमी मतलब परस्त होकर अपने मालिक से हेराफेरी करने की कोशिश करता है तो वो हंसता होगा कहीं से देख कर। मेरी पुस्तक 'फलसफ़ा ए ज़िंदगी' की दूसरी ग़ज़ल इस विषय पर है। पढ़ते हैं फिर समझते हैं।

ढूंढते हैं मुझे, मैं जहां नहीं हूं
जानते हैं सभी, मैं कहां नहीं हूं।

सर झुकाते सभी लोग जिस जगह हैं
और कोई वहां, मैं वहां नहीं हूं।

मैं बसा था कभी, आपके ही दिल में
खुद निकाला मुझे, अब वहां नहीं हूं।

दे रहा मैं सदा, हर घड़ी सभी को
दिल की आवाज़ हूं, मैं दहां नहीं हूं।
गर नहीं आपको, ऐतबार मुझ पर
तुम नहीं मानते, मैं भी हां नहीं हूं।

आज़माते मुझे आप लोग हैं क्यों
मैं कभी आपका इम्तिहां नहीं हूं ।

लोग 'तनहा' मुझे देख लें कभी भी
बस नज़र चाहिए मैं निहां नहीं हूं।

लोग मुझे वहां तलाश करते हैं जहां मैं नहीं हूं, जबकि सब को पता है ऐसी कोई जगह नहीं जहां मैं नहीं हूं। जिस जगह सर झुकाते हैं वहां जाने कौन है। आपके दिल में रहता था निकाल दिया अब नहीं रहता उस जगह। मैं कोई चेहरा नहीं मन की आवाज़ हूं। मुझे आज़माना मत मैं आपका इम्तिहान नहीं हूं। सिर्फ नज़र चाहिए मैं दिखाई दे जाऊंगा छुपा हुआ नहीं हूं। जिनको मुझ पर यकीन नहीं, मानते नहीं, मैं भी कहता हूं कि मैं नहीं हूं। बस सभी खुद अपने आप को पहचान लें काफी है आस्तिक नास्तिक के भंवर में हिचकोले खाती नैया नहीं तूफान सी ज़िंदगी को पार कर किनारे लगने की कोशिश की ज़रूरत है।

हमारे देश का एक संविधान है जो लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आधारित है और धर्मनिरपेक्ष है सभी को इक समान अधिकार आज़ादी से जीने न्याय पाने विचारों को अभिव्यक्त करने के देने को वचनबद्ध है। कोई भी शासक कोई सरकार संविधान से ऊपर नहीं हो सकती है। इसलिए जिस किसी की मानसिकता संविधान के विपरीत होती है उनको न्याय और संवैधानिक संस्थाओं का आदर कर उनके अनुरूप कार्य करना पड़ता है केवल बहुमत हासिल करने से संविधान से खिलवाड़ करने की अनुमति नहीं मिल सकती है। खेद का विषय है कि बहुत लोग देश और संविधान से अधिक किसी व्यक्ति दल अथवा विचारधारा को महत्व देने लगे हैं। ऐसे में शासक और अधिकारी सत्ता का दुरूपयोग कर देश की व्यवस्था से खिलवाड़ कर अपने समर्थक के अपराधों को अनदेखा और विरोधी को निरपराध सज़ा देने जैसा कार्य करते हैं। हर नागरिक अपने विचार और धार्मिक आस्था पर चल सकता है लेकिन किसी को भी किसी अन्य के विचारों से असहमत होने पर नफरत या हिंसा की अनुमति नहीं मिल सकती है। देश का कानून न्यायपालिका सबको समान मानकर सुरक्षित समाज बनाने को प्रतिबद्ध हैं। मेरा हमेशा से यही कहना रहा है इक शेर मेरी ग़ज़ल का है।

हाल-ए-दिल आ के पूछे हमारा जो खुद,
ऐसा भी एक कोई ख़ुदा चाहिए ।

डॉ लोक सेतिया
मॉडल टाउन, फतेहाबाद
हरियाणा -125050
मोबाइल- 9416792330

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

मात्र
200/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक
कराएं प्रति :
94142-39648

व्यंग्य

जीते जी स्वर्ग का अहसास, सोशल मीडिया गरुड़ पुराण

व्हाट्सअप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर आदि सोशल मीडिया ने क्या से क्या कर डाला, जीवनशैली में आया आमूलचूल बदलावए हम उनके आभारी हैं जो व्हाट्सअपए फेसबुकए इंस्टाग्राम, ट्वीटर आदि जात-जात के सोशल मीडिया पर ब्रह्माण्ड भर का ज्ञान, चित्र और भविष्यवाणियों तथा नवीनतम प्रयोगों एवं नवाचारों से रूबरू कराते रहे हैं।

जब से गुड मॉर्निंग के ढेरों संदेश आने लगे हैं तभी से जागरण का इतना अधिक ग्राफ बढ़ गया है कि रात हो जाने पर भी नींद नहीं आती। जब भी सोने की कोशिश करते हैं मस्तिष्क में गुड मॉर्निंग उभर कर आ जाता है और हमेशा यही भ्रम रहता है कि अभी-अभी दिन उग गया है।

जब से गुड नाईट के संदेशों की बौछार होने लगी है तभी से इतनी अधिक नींद भी आने लगी है कि सवेरे जैसे ही उठने का जतन करते हैं, दिमाग में कौंधने लगते हैं वे सारे संदेश, जिनमें गुड नाईट लिखा होता है। जिस दिन गुड मॉर्निंग के संदेशों का बाहुल्य रहता है उस दिन नींद गायब हो जाती है और रात को भी दिन का माहौल नज़र आता है या भ्रम बना रहता है कि अभी रात नहीं हुई और जिस दिन गुड नाईट वाले संदेशों की संख्या बढ़ जाती है उस दिन नींद खुलती ही नहीं, सूरज उगने के बाद भी लगता है कि अभी रात बाकी है, सूरज शायद गलती से निकल आया है। गुड मॉर्निंग और गुड नाईट के संदेशों में बहुमत का गणित कभी दिन की लम्बाई बढ़ा कर नींद छीन लेता है, और कभी रात की लम्बाई बढ़ा कर जगने से रोक देता है।

इन संदेशों के साथ पुष्पों के चित्र आते हैं तो इनकी सुगन्ध के कतरे दिन भर इतने अधिक पसरे रहते हैं कि इसके आगे डियो और विदेशों से आयातित इत्र, फुलैल और स्प्रे तक फीके पड़ गए हैं। पता ही नहीं चल पाता कि आखिर खुशबू गुलाब की है या चम्पा, मोगरा, चमेली या किसी और की। यहां तक कि भगवान के सामने जलायी जाने वाली धूप बत्ती और अगरबत्ती तक की सुगंध का पता ही नहीं चल पाता।

फिर रोजाना इतने सारे भगवान के फोटो और स्तुतियों, मंत्रों और भजनों की बारिश करने वाले मैसेज आते रहते हैं तब लगता है कि चौतरफा धर्म का ज्वार आ धमका है। पूजा और ध्यान करने बैठते हैं तब लगता है कि अद्वैत और वेदान्त को अपनाएं, ज्ञान या भक्ति को अपनाएं, एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा करें या बहु ईश्वरवाद की।

कभी-कभार तो इन संदेशों के साथ इतने अधिक भगवानों का जमघट लग जाता है कि लगता है देवी, देवताओं के चित्रों, कैसेट्स और कैलेण्डर्स की दुकान चला रहे हों और सारे भगवान संघर्ष की मुद्रा में कभी हंसते हैं, कभी हम पर रोते हैं और कभी कुछ और सोचते रहते हैं।

इनसे छुटकारा मिल ही नहीं पाता कि खूब सारे बाबाओं के प्रवचन, उपदेश और दुनिया भर की इतनी अधिक अनचाही सामग्री का ढेर लग जाता है कि जैसे हमने कबाड़ियों का कोई मॉल या मल्टीप्लेक्स या कि सुपर बाजार ही खोल दिया हो जहां वो हर सामग्री उपलब्ध है जिसे कबाड़ कहा जा सकता है।

सोशल मीडिया संसार के बेताज बादशाह बनने के फेर में खूब सारे लोगों को यकायक लीडरशिप की याद आ जाती है और वे ग्रुप बनाकर स्वयंभू एडमिन बनकर उन सभी को जोड़ दिया करते हैं जो परिचित, रिश्तेदार और जानकार होते हैं जैसे कि हम पर कृपा,

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

अनुकंपा और दया करते हुए शेष दुनिया से जोड़ कर हमें वैश्विक पहचान दे रहे हों। बने रहो तब भी आफत, लेफ्ट हो जाओ तब भी आफत। जिसे देखो वो व्हाट्सअप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर आदि सोशल मीडिया के नेटवर्क से जुड़ कर सबसे पहले उन्हीं को हैरान-परेशान करने लगता है जो सम्पर्कित हों। करे भी क्यों नहीं, जब सारा कुछ मुफ्त में आवागमन, आयात निर्यात हो रहा हो।

सामाजिक समरसता, मानव में एकत्व और समानता तथा समभाव का इससे और अधिक कोई दूसरा जीवन्त मंच हो ही नहीं सकता जहां बचपन से लेकर पचपन तक और इससे भी अधिक पार आयु वाले सारे विद्वान और विदुषियां मिलकर दुनिया की सेवा में जुटे हुए हैं। पढ़े लिखें हों या अनपढ़, लट्ठमार हों या पहलवान, ज्ञानी, विज्ञानी हों या कितने ही मेधावी।

इस घाट पर आकर सारे एक साथ पानी पीते हैं, एक साथ हंघते, मूतते और बेशर्म होकर नहाते, धोते हैं और एक साथ तर्क, वितर्क, कुतर्क के साथ आत्म प्रशंसा के गीत गाने लगते हैं। इस अजायबघर या अभ्यारण्य में कोई ऊंच- नीच और छोटा बड़ा नहीं है। सारे के सारे के बराबरी के हकदार हैं और सब कुछ सोचने, करने के लिए स्वच्छन्द हैं। अब कोई कभी बोर नहीं होता। न किसी और की जरूरत पड़ती है। इंसानों की बस्ती में रहते हुए एकान्त का मजा और वह भी अपने मनमाफिक। जब इंसानियत ही नहीं रही, तब हमें इंसानों की क्या आवश्यकता।

जब हम सारे के सारे असामाजिक होते जा रहे हैं, खुदगर्ज हो गए हैं तब क्या जरूरत है समाज की। गधे-घोड़े, बन्दर-भालुओं, सूअर और उल्लु-चमगादड़ों का कौनसा कोई समाज है। घर-परिवार, समाज, क्षेत्र और देश के लिए कोई काम बता दें, किसी प्रकार की सेवा का काम सामने आ जाए, तो हम यह कहकर साफछूट पड़ते हैं कि मरने तक की फुरसत नहीं है, लेकिन व्हाट्सअप, फेसबुक की दुनिया में रोजाना घुसे रहकर घण्टों तक मानसिक यायावरी करने में न तो हमें थकान का अनुभव होता है और न ही कोई पछतावा। बल्कि मौज मस्ती और आनंद का ही अनुभव होता है और वह भी मुफतिया।

ऐसा आनंद हमें न तो माता, पिता और बुजुर्गों या अपने सहधर्मियों, सहकर्मियों, कुटुम्बियों के साथ आता है और न ही अपने बंधुओं और भगिनियों के साथ। इस काम के लिए तो हमारे पास घण्टों की फुरसत रहा करती है। बात जो हमारे व्यक्तित्व विकास, ज्ञान और लोकप्रियता की है। हमारा सारा ज्ञान, हुनर और समय अब इसी में खर्च हो रहा है।

हमारी वैश्विक पहचान बन रही है, दुनिया के लोगों से नेटवर्क स्थापित हो रहा है। यह कोई कम बात है? आज हम विश्व भर में संचरित नेटवर्क का हिस्सा हो गए हैं, यही हमारे लिए परम गौरव और गर्व का विषय है। यह कितनी अच्छी बात है कि हमारे पुरखे जो नहीं कर पाए, वो काम हम रोजाना करने लगे हैं।

आज हम अपने बारे में भले न जान पाएं, अपने घर, परिवार और क्षेत्र के बारे में न जान पाएं लेकिन पूरी दुनिया के बारे में हमारा अतुलनीय, अनन्त, अथाह और अपार ज्ञान इस बात को सिद्ध करता है कि हमारे जैसे लोग सदियों में पैदा होते हैं जिनका सामान्य ज्ञान ही नहीं अपितु असामान्य ज्ञान भी बीते युगों के हमारे पूर्वजों से कई हजार गुना अधिक है। हमारी यह यात्रा इसी तरह बरकरार रही तो आने वाला कल हमारा ही होगा।

हमारे सामने न कोई समस्या होगी, न हम अभावों का परंपरागत रोना रोएंगे। न हमें पुरुषार्थ करना पड़ेगा। क्योंकि इन सभी का अन्ततोगत्वा अंतिम लक्ष्य आनंद पाना ही है और वो काम हम अभी कर रहे हैं। आईये अपने आपको और अधिक ज्ञानवान, हुनरमन्द बनाएं और किसी एक कोने में सदा शोक सन्तप्तों की तरह मरे-अधमरे पड़े रहकर स्थितप्रज्ञता या समाधि अवस्था के साथ वैश्विक पहचान बनाते हुए आत्ममुग्ध अवस्था में रमे रहकर उस दिन की प्रतीक्षा करें जब संसार से इतना सारा ज्ञान पाकर ऊपर वाले के बुलावा आ जाए।

हमने यह सिद्ध कर दिया है कि ऊपर वाले ने जिस मंशा से धरा पर भेजा था उसकी अपेक्षाओं पर लाख गुना अधिक खरे उतर कर हम वो सब कुछ लेकर ऊपर जाएंगे, जो हमारे पुरखे लाख जतन करके भी नहीं ले जा पाए। यही हमारी तरक्की और उपलब्धि है।

आइए, हम सब मिलकर इस दिशा में और अधिक आगे बढ़ें, हमारे पास इसके सिवा और क्या रह गया है। न जीवन का कोई लक्ष्य बचा है, न कोई ध्येय। व्हाट्सअप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर आदि सोशल मीडिया के तमाम मंचों पर जमे हुए अखाड़चियों के प्रति विनम्र श्रद्धान्जलि के साथ।

डॉ. दीपक आचार्य
वरिष्ठ व्यंग्यकार व लेखक
बांसवाड़ा

नाहर ऊं लड़वा रो मौको दो

आ वात घणी जूनी है। मेवाड़ में महाराणा रो राज हो। राणा– महाराणा रै आपणा राज ने आच्छी तरूं चलावा खातर केई जिला, परगणा, ठिकाणा वणाय राखिया हा। अणां ठिकाणा में ठिकाणेदार रावला में ठाकुर केवावता। अणा रै इलाका री पूरी जिम्मेवारी अणां री रैवती। ए कई खास अर घणो भारी काम व्हेवतो तो ये ठिकाणा वाळा राणा– महाराणा रै अरजाऊ व्हेवता। अणां रै पां आपणी फौज– फांटा सब त्यार रैवता, वगत पड़िया राणाजी री मदद पै ए सब आवता। यूं केय सकां कै राणाजी आपणां राव उमराव री मदद सूं पूरो राज ठावो ढबको चलावता। राणा, ठाकर, राव– उमराव सब पीड़िया रै माफत चालती रेवती। वंशानुक्रम रौ सब रावळा में कामकाज चालतो। आं रै कामां पै राणा जी री निजर रेवती। ऐ रावळा वाळा ठाकर, रावजी आपणी मन मरजी करता हद रै बारणै निकल जावता तो राणा जी यानै बेदखल भी कर सकता हा। मेवाड़ राज पूरा भारत में जाण्यो जावै। वीरता रै कारण अर भगति रै कारण। राणा जी अमर सिंहजी 16–32 बणाया। 16 राव ने 32 उमराव। ऐ सब ठिकाणा कायम कर ज्यूं मंत्री, उप मंत्री रा ओहदा व्हे वस्यान हा। याने अधिकार भी पूगता हा। यां रै परगणा री सीमा भी टेम टेम पै बदलती रेवती। जो ठिकाणा रा सिरदार अणां 16–32 आपणां आपणां इलाका ने ढ़ंग सूं संभालता। उदैपुर मेवाड़ री राजधानी व्ही। राणा जी उदैपुर मेलां में बिराजै टेम टेम पै 16–32 री राय चावै तो अणां 16–32 री उदेपुर में हवेलियां बणवाय दीदी।

अणां सब ठिकाणां रा सरदार ठाकुर राजपूत जोरदर हा। पण अणां सब में सलूम्बर चुण्डावत राजपूतां रौ महत्ताऊ अर पाटवी ठिकाणो है। सलूम्बर वाला ने विशेष अधिकार मिल्या थकां हा। अणां सलूम्बर वाळा ठाकर ने 'रावत' री पदवी मिली थकी ही। ई तरूं सलूम्बर मेवाड़ री महत्त्वपूर्ण स्वतंत्र जागीर ही। यां री जेल, सेना– फौज, सिक्कां सब यां रा चालता। मेवाड़ रा राणा रौ दखल नी हा।

सलूम्बर रावत केसरसिंह राज चलावा में माहिर हा। राजनीति में पारंगत हा, वनै सूं मेवाड़ महाराणा भी टेड़ा–टेड़ा नी रेवता। सलूम्बर में राज केसरीसिंह रौ हो, वीं वेळा दिल्ली में बादशाह औरंगजेब रौ राज हो। औरंगजेब मेवाड़ रा राज सूं वाकिब हा अर सलूम्बर सूं भी वाकिब हा। केसरीसिंह योग्य, बुद्धिमान, वीर, राजनीतिज्ञ शक्तिशाली हा। सलूम्बर में अर यारै होड़े– मेरे गावां में भी पूरी धाक ही। वीर शक्तिशाली हैवा सूं वीर बहादुर लोगां सूं वां रै पूरो मिलणो जुलणो हो।

सलूम्बर रावत केसरीसिंह रौ दिल्ली जावा रौ औसर आयो। बड़ा लोग कदी कठेई अकेला नी जावे। वणां रै साथे वणां रा मिलवा वाळों मितर जस्याक ही बस्सी गाम रौ राजपूत मोट्यार भी लारै व्हियो के दिल्ली म्हूं भी कदी नी गियो तो रावत साब लारै जावा री वणी भी पूरी त्यारी कीदी। दिल्ली केसरीसिंह जी ने लारै राजपूत सरदार आपणां घोड़ा लेय साथियां साथै वठै पौचिया। दिल्ली दरबार में ए दोई जणां जावै। वठै दरबार में एक जंगी पहलवान घूमी रियो हो। वी पेलवान रै पगां में मोटी मोटी हांकला बंधी ही। ज्यू पेलवान चाले ज्यूं हांकला खण–खण वाजे। धरती पै टकराय जो न्यारी, बोझ में हांकळ भारी। चालतां

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
डिजिटल राजस्थान,समृद्ध राजस्थान
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

चालतां वीं राजपूत हरदार रै पग नीचे हांकल आई गी, वी राजपूत हरदार रौ पग वीं हांकळ पै पड़ी गियो। पेलवान री चाल थम गी। वीं ने भारी रीस आई, आंख्या पलभर में लाल व्हेईगी, दिमाग फर्‌यो और क्रोध असो आयो के बस।

कड़क आवाज में पेलवान पूछयो कै थूं कुण है ? वो पेलवान बोल्यो 'म्हूं बादशाह रौ इश्चा हूं'। अतराक में वो राजपूत हरदार बोल्यो के थूं बादशाह रौ इश्चा है, तो म्हूं राव साहब। वो कई होचे वी वीं पेलवान राजपूत हरदार ने पकड़ताई ने झंझोड़ियो राजपूत हरदार सलूम्बर मेवाड़ रौ वीं आव देखियो न ताव वीं पेलवान ने कमर सूं पकड़ ने उठाई लीदो ने धरती पै पांच हाथ दाण पटक पटक ने वणी ने कई चौक नी वन्धवा दी दो। वणी पेलवान ने दन में तारा नजर आवा लाग ग्या। पेलवान भी आपणा दो चार दाव लगाया। ये सब दाव राजपूत हरदार चालवा नी दीदा। ज्यूं ज्यूं पेलवान दाव लगावे ज्यूं ज्यूं राजपूत हरदार रो बल जागे। स्वाभिमान जागे। हरदार मन में होच्यो के इण सूं हारिया तो माजनो वगड़ जावे ला। माजना रा कांकरा व्हेई जावेला अर राव साहब रौ कई रेलां। यां दोया में थोड़ी देर गुथमगूथा चालती री। पछे राजपूत हरदार आपणी कुलदेवी ने सुमरी पछे तो कुण कै ने कणी री वात। वीं पेलवान ने हवा में उछाल उछाल ने पटक्यो। पटक्यो तो असो पटक्यो के वीं पेलवान रा तीन टूकड़ा करी न्याका।

आ वात चालती चालती बादशाह तक पोंची। अबै बादशाह ने खार आयो के ओ असो कूण जी म्हारा नामी पेलवान रा तीन टूकड़ा करी नाक्या। पतो लाग्यो के सलूम्बर मेवाड़ राव साहब रै साथै एक राजपूत हरदार है, वीं पेलवान रौ काम तमाम कर दीदो। बादशाह खूब होच्यो ने पछै विचारियो के ओ सब केसरीसिंह री वजह सूं वीयो। वीं हरदार ने साथै केसरी सिंह लायो है तो गुनाहगार वीं केसरी सिह जी रावत साहब ने मान्या। गुस्सा सूं लाल पीळो बादशाह औरंगजेब फरमान हुणायो के काले म्हारा केसरी (शेर) सूं केसरी सिंह री कुश्ती व्हेगा। शेर से सामै मिनख री कई चाले ? मिनख ने आखिर मरणो पड़सी। म्हारे पेलवान रै मरवा रौ बदलो यूं लेवा। बस केसरी सिंह ने बादशाह इत्तला करवा दीदी के त्यार वै जाओ, काले म्हारे केसरी सूं थाणै भिड़णो है।

केसरी सिंह जी मन में होच्यो के आ कसी आफदा मोल लीदी। पण करां कई बादशाह रौ हुकम है, टळ नी सकें। केसरी सिंहजी दिमागी घोड़ा दौड़ाया, वानै वठे एक संत सूं जिण रौ नाम संत तुलसीराम जी हो, याद आया रावत साहब अर राजपूत ऐ दोई वां संत पा जाय साष्टांग दण्डवत कीदी के अबे है जो सब संता आपरै हाथ में है। संत पागड़े जीत रौ आशीर्वाद दीदो अर कियो के ऐ केसरी सिंह थूं जणीऊं लड़ेगा अर जो थारै सामै व्हेगा वीं रौ आधो बल थारै में आ जावेगा। मतलब के सामै जो प्राणी थां सूं लड़ेगा, वीं म्हे वां रौ आधो बळईस रेगा। थारां में थारो बळ तो रेगा ही वांरौ आधे बळ थारां में आवा सूं थांमे वासू डेढ़ो बळ व्हेई जाई।

रातभर केसरी सिंहजी अर वांरे साथी सरदार ने नींद नी आई। क्यूं के काले नाहर सूं लड़णो है। बादशाह आपणै मेहलां रै वच्चे चौक में पींजरा में बंद करी ने शेर ने लाया। चारी आड़ी दरबारी, दर्शक अर भारी भीड़। केसरीसिंह जी लारै राजपूत हरदार भी त्यार पण लड़णो तो केसरीसिंह जी ने हो। पिंजरा सूं नाहर दोड़्यो नाहर रै सामै केसरीसिंहजी ईष्ट ने, संत ने सुमरता ही नाहर सूं भीड़ पड़्या। नाहर गुरातो झपटियो, केसरीसिंहजी एक मैरे व्हेताई नाहर री पूंछ सूं घूमताई कमर सूं पकड़ दबायो। नाहर पाछो मूड़णो चावे पण मूड़ नी सक्यो। मौको देखतांई केसरीसिंह जी तुरन्त नाहर रे सामै आय वां रौ जबड़ो पकड़ लीदो। दोई गुथमगूथा व्हेवा लागा। केसरीसिंह जी वां रौ मुण्डो दबोच अर जोर

लगाय जबड़ो पाछो पकड़ताई चीर नाक्यो। केसरीसिंह जी नाहर रा पंजा रा नखां सूं खूना खून अर नाहर दहाड़ करतो करतो वठैई ढेर वेई ग्यो। बादशाह रा दरबारी अर दर्शक दांता तक आंगळी दबाय केसरीसिंह जी री वीरता ने मान ग्या।

केसरी सिंहजी रै ईं पराक्रम अर शक्ति ने देख बादशाह ऊपरू तो घणो राजी वीयो ने रावत साहब ने घणो मान करता, ईनाम इकरार दीदो। बादशाह मन में होच्यो ओ तो कदी भी आपणै अकेला देखीन कांई भी करी सके। वणी होच्यो के केसरी सिंहजी री दिल्ली में हाजरी देणो बंद (माफ) करो। बादशाह रावत साहब री हाजरी माफ कीदी के अबे आपने दिल्ली हाजरी में नी पधारणो है। आज सूं ही आपरी हाजरी माफ। केसरी सिंहजी पाछा सलूम्बर पधारे तो ऐ अठऊं गिया तो दो जणां हा। एक तो केसरीसिंहजी अर राजपूत हरदार पण आवती वगत वै वठुं तीन जणा आया। तीजा जणां ने जारै लाया हा। व्हे संत तुलसीरामजी। तुलसीरामजी संत ने सलूम्बर लाय अर अठै वैद्यनाथ मन्दर री सेवा सौंपी ने वठै वणां ने पुजारी वणाया। या सन्ता वठै एक

लीमड़ो लगायो वीं लीमड़ा री खासियत या कै वीं री एक डाळी पै आज भी मीठा पानां आवै, आखो लीमड़ो कड़वो सिवाय एक डाळी रै।

आ वात तो दिल्ली से मुगल बादशाह री जिं केसरीसिंह जी ने मारवा सामै नाहर लाया। अन्त में नाहर रा प्राण पंखेरू उड़ ग्या। क्यूं के बादशाह रै तो एक केहरी हो वठै केसरी अर आगे फैरू सिंह लागै ओ दो बीं नाहर सूं भी नाम मूं दुणो है। अठै मिनख ने जबरदस्ती शेर सूं लड़ायो। मिनख नी चावतो के वो नाहर सूं लड़े, पण अबे जो वात म्हूं वतावणो चाही रियो हूं, वा है के मिनख शेर सूं लड़णो चावे, पण राणाजी लड़वा री इजाजत नी देवे। मन री आस मन में ही यूं रेयजा।

घटना है मेवाड़ रे महाराणा भोपालसिंह जी रै राज हो। वीं टेम अरावली रा पहाड़ा में जंगल, जंगल में नार, चीतरा, हूर ने गंज जंगली जानवरां री भरमार ही। एक चर्चा चारो मेर घणी जोर सूं चाली के एक नौहत्था नाहर पींजरा में पकड़ी ने उदैपुर लाया है। घणां जणां वीं नाहर ने देखवा जावै सेर रा लोग जावे तो जावै अर देखी ने आवे, पण गामा रा लोगा री भीड़ भी देखवा आवे। आ खबर कांकरोली भी पोची। नाथद्वारा– कांकरोली में कई कुश्ती री व्यायामशाला अखाड़ा है। कांकरोली में एक पेलवान वण्डो नाम हो मन्ना सिंह। लोग वणा ने मन्ना सिंहजी दायजी केवता। वणारै मन में आई के आपा भी देखां के वो कसोक नाहर है, व्हे सके तो एक वां सूं कुश्ती भी कर लांगा। यो विचार आता ही मन्नासिंह जी कांकरोली महाराज बालकृष्ण जी सूं आज्ञा लेवा ग्या। महाराज ने मन्ना सिंह जी किवे के उदैपुर नाहर पकड़ लाया है। म्हारो विचार वां सूं कुश्ती लड़वा रो है। आपरो आसीर्वाद लेवा आयो हूं। महाराज हुणताई ने चकित व्हेई ग्या, अबे अंडी भावना है, शुभ मोहरत में आयो है, अबे नटां किंकर। बालकृष्णजी महाराज बोल्या– म्हारो आशीर्वाद थारै साथै है। मन्नासिंहजी उदैपुर पोच्या। राणाजी रा मेला आगे संतरी डीलडोल देखीन पूछियो अठै क्यूं ऊबो हो। वे बोल्या राणाजी सूं मिलणो है। वणां ने वड़ी पोल सूं त्रिपोल्या आगे भेज्या। अबे तोरण पोल पै पाछा रोक्या ने पूछताछ कीदी। मन्नासिंह जी महाराणा सूं मिलवा री वात बताई। अबे मन्नासिंह जी ने दरबार रा पर्सनल सेकेट्री सूं मिलवाया। वणां पूछताछ कीदी, कणी बाबत मिलणों, काम कांई है ? मन्नासिंह जी जा वात ही वा वताई दीदी। अबे दरबार भोपालसिंहजी सूं मन्नासिंहजी मिले। आब अदब पूरो निभाय ने बोल्या– हजूर में हुण्यो के अठै नौह हत्था नार पकड़ियो है। म्हूं वी नाहर सूं लड़णो चाऊं, कुश्ती करणो चाऊं। हजूर आज्ञा फरमावे। भोपालसिंहजी नाहर ने देखता अर सामै मन्नासिंह जी ने मन में विचारता मन्नासिंह ने साफ नट जावे के म्हूं थाणे नाहर सूं लड़वा री इजाजत कणी भी हाल में नी देय सकूं।

कणी पेलवान सूं लड़े तो थनै इजाजज देई सकूं। मन्ना सिंह जी बोल्या पेलवाना सूं तो घणा ही लड़िया। म्हनै तो आप वीं नाहर सूं लड़ाओ होकम। भोपालसिंह जी दरबार साफ नट ग्या। पण मन्नासिह जी री बहादुरी अर जज्बात देखीने दरबार भोपालसिंहजी घणां राजी वीया। राजी वेईने मन्नासिंह जी ने एक थैली भेंट दीदी, जिण में माणक, मोती, जवाहरात अर चांदी रा सिक्का हा। मन्नासिंह जी वीं थैली ने सिर आंखों पै लगाय अर वीं थैली सूं एक चांदी रौ सिक्को निकाल्यो। वोकलदार सिक्को वणां अंगूठा अर आंगळी रै वच्चे लेय ने जोर लगाय ने लाम्बो कर दीदो। दरबार में हलचल वेईगी। मन्नासिंह जी वो लाम्बो सिक्को अर थैली दरबार भोपालसिंहजी रे चरणा में मेली ने बोल्या– हुजूर आपरी किरपा सूं द्वारकाधीश प्रभु री म्हारे पै पूरी किरपा है। रोज म्हारे जीवन में चक छण री है। कई कमी नी है। मजो तो जद आवतो के आप म्हाने नाहर सूं लड़वा री ईजाजत देवता। मन्नासिंह जी मन री आस मन में लेय ने पाछा कांकरोली आ गिया। कांकरोली महाराज बालकृष्ण जी ने पूरो वाकियो सुणायो। महाराज श्री घणां राजी वीया, परसादी दीदी। मन्नासिंहजी ने बम्बई (भुवनेश्वर) में द्वारकाधीश री सेवा में सन् 1924 में राख लिया।

पुरुषोत्तम 'पल्लव'
वरिष्ठ साहित्यकार, उदयपुर
मो. 97724-73495

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

TMG

The Marutinandan Grand

LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA

The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001

www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद, 94142-39648, 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन